हिंदी

समतुल्य पाठावली

कक्षा 10

केरल सरकार

शिक्षा विभाग

केरल राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण

द्वारा निर्मित

2020

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग,
विंध्य-हिमाचल, यमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे !

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है। सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्रेम है और उसकी संपन्न और विविध परंपरा पर गर्व है।
उसके योग्य होने के लिए मेरा प्रयत्न जारी रहेगा। माता-पिता, गुरु तथा अग्रज
मेरे आदरणीय होंगे और उनसे मेरा व्यवहार सम्मानपूर्ण होगा।
मेरी प्रतिज्ञा है कि अपने देश और जनता के प्रति मेरी श्रद्धा अटल रहेगी।
उनकी उन्नति और समृद्धि पर ही मेरा सुख निर्भर है।

Prepared by:
Kerala State Literacy MissionAuthority (KSLMA)
'Aksharam', Near Pettah Boys HSS, Pettah P.O., Thiruvananthapuram 695 024

Website	: www.literacymissionkerala.org
e-mail	: info.kslma@kerala.gov.in
Phone	: 0471-2472253/2472254, Fax: 0471-2462252
First Edition	: 2020
Cover & Layout	: sanil alathoor
Printed at	: KBPS, Kakkanad, Kochi-30
Price	: ₹ **50.00**

© Department of Education, Government of Kerala

अध्येताओं से

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा में शिक्षण की नवीनतम अवधारणाओं की चमक में वर्तमान शिक्षा प्रणाली उदीयमान दिशा धारण कर रही है। इसको आधार मानकर केरल राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में चमत्कारी परिवर्तन होते आ रहे हैं। औपचारिक पढ़ाई का मौका जिन अध्येताओं को प्राप्त नहीं हुआ था, उनको लक्ष्य करनेवाले समतुल्य कार्यक्रम में भी इसी का प्रतिरूप दिया जा रहा है।

हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने के साथ हिंदी में साहित्यिक तथा व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने हेतु दसवीं कक्षा की यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इसका रूपायन रोचक ढंग से हुआ है ताकि अध्येता में हिंदी सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने की अधिक से अधिक क्षमता जागे।

आशा है, आप इसका पूरा का पूरा लाभ उठाएँगे।

डॉ.पी.एस.श्रीकला
निदेशक
केरल राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण

ശില്പശാലയിൽ പങ്കെടുത്തവർ

അധ്യാപകർ

ഡോ. നന്ദകുമാർ സി.	സെന്റ് ജോസഫ്സ് എച്ച്.എസ്.എസ്. തിരുവനന്തപുരം
ഡോ. ഗീത എസ്.	ഗവ. ഗണപത് എച്ച്.എസ്.എസ്., കോഴിക്കോട്
ഡോ. നിഷ എം.	ഗവ. എച്ച്.എസ്.എസ്., നെയ്യാർഡാം
ഡോ. രോഹിണി കെ.കെ.	മുസ്ലീം അസോസിയേഷൻ കോളേജ് ഓഫ് ആർട്സ് & സയൻസ്, നെടുമങ്ങാട്, തിരുവനന്തപുരം
ഡോ. സജിത എസ്.ആർ.	ഗവ. യു.പി.എസ്., നരിപറമ്പ, പാലക്കാട്

ചിത്രരചന

സുമേഷ് ബാല	ആർട്ടിസ്റ്റ്

അക്കാദമിക ചുമതല

പ്രൊ. (ഡോ.) എസ്.ആർ. ജയശ്രീ	യൂണിവേഴ്സിറ്റി ഓഫ് കേരള

വിദഗ്ധസമിതി

കെ.കെ. കൃഷ്ണകുമാർ	സീമ-61, ആനയറ നഗർ, തിരുവനന്തപുരം

കോ-ഓർഡിനേഷൻ

കെ. അയ്യപ്പൻ നായർ	അസി. ഡയറക്ടർ (തുല്യത & അക്കാദമിക്) സംസ്ഥാന സാക്ഷരതാമിഷൻ

കോ-ഓർഡിനേഷൻ സഹായം

രഞ്ചി എസ് എസ്	പ്രോഗ്രാം ഓഫീസർ, സംസ്ഥാന സാക്ഷരതാമിഷൻ

भारत का संविधान

भाग ४ क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद ४२ क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उनका परिरक्षण करे,

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके, और

ट) छह और चौदह साल के बीच के अपने बच्चे/बच्ची को या अपने संरक्षण में रहनेवाले बच्चे/बच्ची को उसके माता-पिता या अभिभावक तदनुकूल शिक्षा प्रदान करने का अवसर दें।

अनुक्रमणिका

इकाई एक

पौधों की पीढ़ियाँ	कविता	08-11
बूढ़ा कुत्ता	संस्मरणात्मक निबन्ध	12-15
विज्ञापन	लेख	16-18

इकाई दो

रहीम, कबीर, तुलसी	दोहे	22-24
कश्मीरी सेब	कहानी	25-27
'पा'	फिल्मी समीक्षा	28-29

इकाई तीन

अब चिड़ियाँ कहाँ रहेगी	कविता	34-36
सिलिया	कहानी	37-42
कारतूस	एकांकी	43-47

इकाई चार

ताना-बाना	कविता	52-53
स्टीफ़न हॉकिंग्स	जीवनी	54-56
डूब	उपन्यास अंश	57-60

इकाई एक

पौधों की पीढ़ियाँ

बूढ़ा कुत्ता

विज्ञापन

कविता

पौधों की पीढ़ियाँ

हरिवंशराय बच्चन

देखा, एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है; उसके नीचे हैं
छोटे-छोटे कुछ पौधे -
बडे सुशील-विनम्र।
लगे मुझसे यों कहने,

"हम कितने सौभाग्यवान हैं।
आसमान से आगी बरसे, पानी बरसे,
आँधी टूटे, हमको कोई फिकर नहीं है।
एक बड़े की वरद छत्र-छाया के नीचे
हम अपने दिन बिता रहे हैं;
बड़े सुखी हैं!"

'बरगद' और छोटे पौधे किसकी ओर संकेत करते हैं?

'हम कितने सौभाग्यवान हैं' छोटे पौधे ऐसे क्यों कहते हैं?

देखा, एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है; उसके नीचे हैं
छोटे-छोटे कुछ पौधे -
असन्तुष्ट औ रुष्ट।

देखकर मुझको बोले,
"हम कितने बदकिस्मत हैं!
जो खतरों का नहीं सामना करते
कैसे वे ऊपर को उठ सकते हैं!
इसी बड़े की छाया ने तो
हमको बौना बना रखा;
हम बड़े दुखी हैं।"

देखा एक बड़ा बरगद का पेड़ खडा है उसके नीचे हैं
छोटे-छोटे कुछ पौधे -
तने हुए, उद्दण्ड।

देखकर मुझको गरजे –
हमको छोटा रखकर ही
यह बड़ा बना है;
जन्म अगर हम पहले पाते
तो हम इसके अग्रज होते,
हम इसके दादा कहलाते,
इस पर छाते।
नहीं वक्त का जुल्म हमेशा
हम यों ही सहते जाएँगे।
हम काँटों की
आरी और कुल्हाडी अब तैयार करेंगे;
फिर जब आप यहाँ आयेंगे,
बरगद की डाली-डाली कटती पायेंगे;
ठूँठ मात्र यह रह जाएगा –
नंगा-बूचा,
और निगल जाएँगे तब हम इसे समूचा।"

हम कितने बदकिस्मत हैं' - कुछ पौधे इसप्रकार क्यों सोचते हैं?

'हमको छोटा रखकर ही यह बड़ा बना है' - और कुछ पौधे ऐसे क्यों सोचते हैं?

यहाँ किस सामाजिक स्थिति का इशारा है?

कविता के प्रतीकों को चुनकर तालिका भरें।

प्रतीक	किसका प्रतिनिधित्व करता है।
बरगद	

चर्चा करें...

- "एक बड़े की वरद छत्र-छाया के नीचे
  हम अपने दिन बिता रहे हैं,
  बड़े सुखी हैं।" – इन पंक्तियों के आशय पर चर्चा करें और आशय व्यक्त करें।
- "हमको बौना बना रखा
  हम बड़े दुखी हैं। - इन पंक्तियों द्वारा कुछ पौधों का असंतोष प्रकट हैं। आधुनिक सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर चर्चा करें।

टिप्पणी तैयार करें।

'पौधों की पीढ़ियाँ' कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।

आस्वादन टिप्पणी की परख

- कवि का परिचय है।
- कविता का सार और मुख्यभाव है।
- अपने दृष्टिकोण में कविता का विश्लेषण किया है।

लिखें

- कविता के लिए अन्य शीर्षक दें, समर्थन करें।
- पर्यावरण से संबंधित अन्य कविताओं का संकलन करें।

हरिवंशराय बच्चन

जन्म	:	27 नवंबर 1907
स्थान	:	इलाहाबाद, प्रतापगढ जिला
कविता संग्रह	:	मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण
आत्मकथा	:	क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दश द्वार से सोपान तक।
सम्मान	:	साहित्य अकादमी पुरस्कार (1968), पद्मभूषण (1976)
मृत्यु	:	18 जनवरी 2003

बूढ़ा कुत्ता

रामवृक्ष बेनिपुरी

बार-बार दुत्कारे जाने, झाड़ु आए जाने पर भी जब यह कुत्ता बरामदे के बाहर, अगले पैर खड़े कर और अपने पिछले भाग को ज़मीन से सटाकर, बैठकर धीरे-धीरे पूँछ हिलाता हुआ करुण सजल आँखों से मेरी ओर देखने लगता है, तो समझ में नहीं आता, क्या किया जाए।

बूढ़ा हो गया है यह। समूची देह में खौरा लग गया है, जिसे अपने ही पंजों से खरौंद-खरौंदकर इसने सारे बदन में घाव कर लिये हैं। इसका

पेट भी खराब हो गया है, आसपास गंदा करता रहता है। शरीर से बदबू निकलती रहती है, ऐसी कि उबकाई आ जाए। फिर भला इसे कौन बरामदे में चढ़ने दे, घर में आने दे?

ज्यों ही वह इस ओर बढ़ा कि हर मुँह दुत्कार-फटकार बरसने लगती है, तो भी यह नहीं मानता। फिर तो इस पर झाड़ू से, छड़ी से, खड़ाऊ से, जूतों से भी मार पड़ने लगती है। मार खाने पर भी यह तब तक मुड़ने का नाम नहीं लेता, जब तक कि चोट असह्य नहीं हो जाती। तब 'कूं-कूं' करता यह बरामदे के नीचे उतर जाता है, किन्तु वहाँ से भागने का नाम नहीं लेता। वह बैठ जाता है और लगता है टुकुर-टुकुर मेरा मुँह देखने।

एक मित्र ने कहा, "कुचला खिला दीजिए, मर जाएगा।" एक बंदूक-धारी मित्र बोले, "पचास पैसे भी न बरबाद होंगे, गोली से उड़ा देता हूँ।" सोचता हूँ, इसकी इस बुरी गति से मौत अच्छी होगी। किन्तु, चाहकर भी कभी मुँह से 'हाँ' नहीं निकल पाता।

बहुत दिनों से हमारे घर है यह। इसका जन्म कहाँ हुआ, पता नहीं। इसका बचपन भी कहाँ बीता, इसकी भी खबर नहीं। एक दिन गरमी की दुपहरिया में एक मोटा-ताजा पिल्ला मेरे घर में न जाने कब घुस आया और खाट के नीचे लेट गया; वह थका था, गरमी से परेशान। खाट के नीचे की ठंडी ज़मीन उसे सुखद लगी। वह चुपचाप लेटा हुआ ज़ोरों से हांफ रहा था। मैं खाट पर चैत की दुपहरिया की झपकी ले रहा था। एक समान ताल से निकलनेवाली हांफने की आवाज़ से आँखें खुलीं, इधर-उधर देखा, कुछ नहीं; खाट के नीचे देखा तो सबसे पहली नज़र इसकी चमकती आँखों पर पड़ी; उस दिन भी इसकी आँखों में ऐसी ही सजलता और करुणा पाई थी।

इसका शरीर धूलि-धूसरित था। इसके बदन पर दाँत के कई दाग थे, जिनसे ताज़ा खून टपक रहा था। 'अतू-अतू' कहकर बुलाया, इसकी करुण आँखें आनन्द से चमक उठीं। किन्तु, बेचारे की हिम्मत नहीं हुई कि बाहर आए। मैं जाकर थोड़ा दही-भात ले आया और खाट के नीचे ही रख दिया। उसे खाकर फिर वह लेट गया। मैं भी खाट पर सो गया।

जब शाम की नींद टूटी और मैं गाँव की ओर निकला तो देखा, यह मेरे पीछे-पीछे लगा है। अपनी धिकार-सीमा के अन्दर एक अपरिचित को देखकर गाँव के कुत्ते भौंकने लगे। एक-दो इसकी ओर टूटे भी। जब वे टूटते, यह मेरे पांवों के बीच आ जाता। मैं उन्हें दुत्कार देता। किन्तु धीरे-धीरे इसने किसी प्रकार उनसे दोस्त गांठ ली, यह उनमें से एक हो गया, इसका वर्णन करके समय क्यों बरबाद करूँ?

अच्छा भोजन, घर भर का प्यार और सुरक्षा पाकर थोड़े ही दिनों में यह अच्छा-खासा कुत्ता बन गया। रोएं चिकना गए, बदन के दाग मिट गये। जिसे कभी सुरक्षा चाहिए थी, वही मेरे घर-आंगन का प्रहरी बन गया। जो कुत्ते उस दिन इस पर भौंके थे, उन्होंने भी उसे सरदार मान लिया। वह संकोचशील पिलपिला किशोर अब एक प्रगल्भ सबल युवक था।

गाँव से दूर हटकर खेत में घर बनवा लिया। इतने पैसे कहाँ कि रात भर पहरा देने के लिए कोई संतरी रख सकूँ और स्वयं कहाँ तक जागा जाए! भरोसा था तो इसी कुत्ते का। ज्यों ही

हमारी नींद लगी, इसने घर के आसपास चक्कर लगाना शुरू किया और ज्योंही दूर पर किसी को देखा या ज़रा-सी आहट पाई कि लगा भौंकने। जब तुरन्त नींद लगी हो, इसका भौंकना कितना बुरा लगता। प्रायः बाहर आकर इसे डांटता, डांटने पर चुप हो जाता। नज़दीक आकर बदन सूंघ जाता – जैसे इत्मीनान दिलाता – जाइए आप निश्चित सोइए, किन्तु, फिर ज़रा-सी खटपट हुई कि वही भौंकना। आप सोइए न सोइए, यह कुत्ता ऐसा नहीं होने देगा कि आपके घर में कोई चोरी हो जाए।

और इसके बावजूद जो एक बार चोरी हो गयी, तो क्या उसमें इस कुत्ते का कोई कसूर है? हमारे घर में एक विदागिरी होनेवाली थी। दिन भर धूम-धाम रही, रात में बड़ी देर तक गाँव की स्त्रियाँ आती-जाती रहीं। जब घर के लोग सोने गये तो ऐसे सोये कि जैसे घोड़े बेचकर सोए हों और यह कुत्ता घर के सामने आकर गला फाड़-फाड़कर भौंकता रहा। अचानक रानी की नींद टूटी और वे अपने कमरे से बाहर हुई, तो कुत्ता घर पीछे की ओर भौंकता हुआ दौड़ा। उन्हें कुछ सन्देह हुआ। वे लोगों को जगाने लगीं, शोर करने लगीं। जब रोशनी की गई, देखा गया, घर में सेंध हैं, कुछ चीज़ें चली गई हैं, किन्तु इस कुत्ते ने ही बचा लिया, नहीं तो उस दिन सर्वनाश ही हो गया होता।

दिन में देखा, चोरों ने कई बार कुत्ते पर आक्रमण किया था। एक बर्धा तो ऐसा लगा था कि कहीं यह कतरिया न गया होता तो उस दिन इसका वारा-न्यारा ही हो गया होता।

यह कुत्ता थोड़ी ही दिनों में जान गया था कि यद्यपि घर का मालिक मैं हूँ, किन्तु यहाँ तो राज्य जहांगीर का नहीं, नूरजहां का है। अतः रानी के प्रति सदा ही इसकी अधिक प्रीति और भक्ति रही। जब रानी पालकी पर अपने मैके गई, यह उनकी पालकी के साथ-साथ उनके मैके तक गया और जब तक वहाँ रहीं सदा उनके पलंग के नीचे ही सोता रहा। मैके से उन्हें मैं कार पर ले आया। हमने चाहा कि इसे कार पर बिठा लें, किन्तु ज्यों ही कार खुली, यह घबराकर नीचे कूद पड़ा। अब क्या करें? उसे छोड़ना न चाहते थे। हारकर कार पर हम चले आए, यह ताकीद करके कि सामान के साथ जो बैलगाड़ी आ रही हैं, उसके साथ ही इसे भेज दिया जाए। दूसरे दिन घर पर हम इसकी प्रतीक्षा में थे कि यह झट से सामने आ खड़ा हुआ। अरे, अरे, यह क्या? सारा शरीर धूलि धूसरित हैं, शरीर में कितने जख्म हैं! लगता है, ज्यों ही हमारी कार आँखों से ओझल हुई, यह बैलगाड़ी की प्रतीक्षा किए बगेर वहाँ से निकला और रास्ते भर अपनी बिरादरी के लोगों से लड़ता-झगड़ता, उनके अनेक व्यूहों की वीर अभिमन्यू-सा चीरता, रात में कहीं थोड़ा विश्रमा कर, भोर-भोर यह हमारे यहाँ पहुँच गया । रानी ने इसे नहलाया, इसके जख्मों पर मरहम लगवाया और फिर यह अपनी ड्यूटी पर डंट गया।

आप ही बताइए, ऐसे स्वामिभक्त, कर्तव्यपरायण, साहसी जीव के साथ क्या वही व्यवहार करना उचित है, जो हमारे मित्र बताते हैं?

किंतु जब-जब इसे रूप में देखता हूँ, चित्त उद्विग्न हो जाता है, इसकी हालत देखकर नहीं, संसार की हालत पर; और कुछ अपना भविष्य सोचकर भी ।

यह कम्बख्त बुढ़ापा क्या चीज़ है? यह क्यों शरीर से शक्ति छीन लेता है, जर्जर, क्षीण बना डालता है? जीवों का अंत इतना बुरा क्यों होता है? बचपन का दुलार, जवानी का प्यार और उसके बाद बूढ़ापे की यह दुत्कार -फटकार! सारी शक्ति खोकर, सारा सम्मान, तिल-तिल गल-गलकर मरना.....विधाता, यह तुम्हारा विधान कैसा है?

बताएँ

- मित्रों की बातों से क्या आप सहमत है? क्यों?
- लेखक और कुत्ते के बीच का संबन्ध कैसा था?
- कुत्ते की घटना प्रस्तुत करके लेखक किस सामाजिक सत्य की ओर इशारा करते हैं?
- "वर्तमान मानव की स्थिति भी 'बूढ़े कुत्ते' से भिन्न नहीं" - विचार करें।

विचार करें, लिखें

- "बुढापा अभिशाप है?" अपने अनुभव की एक घटना प्रस्तुत करें।
- संस्मरण में चित्रित घटना को रपट के रूप में प्रस्तुत करें।

उदाहरण देखें और लिखें।

कुत्ते भौंकने लगे।
लड़की नाचने लगी।
कैलास पढ़ने .....।
राणी दौड़ने .....।
लोग हँसने .....।

'लग' का प्रयोग कब? कैसे? चर्चा करें ।

पढ़ें।

- शाम की नींद दूरी और मैं गाँव की ओर निकला।
- घर भर का प्यार और सुरक्षा पाकर थोड़े ही दिनों में यह अच्छा-खासा कुत्ता बन गया।
- बचपन का दुलार, जवानी का प्यार.....।

⏩ वाक्यों में रेखांकित परसर्गों पर ध्यान दे, जिनके अर्थ समान और रूप अलग-अलग है। क्यों? चर्चा करें।

⏩ ऐसे परसर्ग युक्त वाक्यों को संस्मरण से चुनकर लिखें।

नाम	:	रामवृक्ष बेनीपुरी
जन्म	:	23 दिसंबर 1899
स्थान	:	मुजफ़रपुर जिला, बिहार, बेनीपुर गाँव
रचना	:	पतितों के देश (उपन्यास), आम्रपाली (उपन्यास), अम्बपाली (नाटक), सीता की माँ (नाटक), नेत्रदान (नाटक), जयप्रकाश नारायण (जीवनी), माटी की मूरतें (कहानी संग्रह), चिता के फूल (निबन्ध)।
मृत्यु	:	7 सितंबर 1968

⏩ रामवृक्ष बेनीपुरी पर एक लघुलेख तैयार करें।

यह दुनिया विज्ञापन से ज़्यादा कुछ नहीं

विज्ञापन एक कला है। आज का युग विज्ञापन का है। विज्ञापन के विकास से दुनिया का क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। विज्ञापन ने समाचार-पत्र, रेड़ियो और टेलिविज़न में अपना साम्राज्य बनाया।

आज विज्ञापन के लिए विज्ञापन गृह एवं विज्ञापन संस्थान स्थापित हो गई है। इस प्रकार इसका क्षेत्र विस्तृत है। विज्ञापन व्यापार व बिक्री बढ़ाने का एक प्रभावी माध्यम है। देखा जाता है कि व्यापारिक संस्थाएँ केवल विज्ञापन के बल पर ही अपना माल बेचती है। कुल मिलाकर विज्ञापन कला ने आज व्यापार के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

"आलसमय सुबह आँख खुलते ही
मेरे सामने पसारा था
विज्ञापन का सुनहरा संसार।
दूध सी सफेदी
अब और भी सफेद
और भी झागदार
की चिल्ल-पों।
अब और भी सफ़ेद
नकार रहा था
पुरानी सफेदी को
जो उसी कंपनी का प्रोडक्ट था।
विज्ञापनों में हर चीज़
पहले से अच्छी और बेहतर होती है
कभी कभी सोचता हूँ
कितना अच्छा होता
अगर यह दुनिया भी
एक विज्ञापन भी।" *(मृत्युंजय प्रभाकर।)*

कवि सम्मेलनों, दीवाली मेलों और अन्य कई प्रकार के कार्यक्रमों के विज्ञापन देख सकते हैं। परिधान व्यवसाय में तो विज्ञापन सुन्दरियों के सहारे ही आगे बढ़ते हैं। चुनाव के दिनों में राजनैतिक पार्टियों के विज्ञापन भी हम देखते हैं। औद्योगिक क्रांति के कारण जैसे-जैसे एक ही वस्तु के विभिन्न रूपों का उत्पादन होने लगा और उपभोग के लिए नई-नई वस्तुएँ पैदा की जाने लगीं वैसे-वैसे विज्ञापन का महत्व बढ़ता चला गया।

आज हम उच्च प्रौद्योगिकी के ऐसे दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ टूट गई है। पूरा विश्व एक 'ग्लोबल विल्लेज' की अवधारणा में समा गया है। भूमंडलीकरण के दौर में विकसित देशों ने विकासशील देशों के बाज़ार पर अपना अधिकार स्थापित किया। इससे पूरे विज्ञापन जगत को लाभ मिला।

आजकल विज्ञापनों में स्त्रियों का शोषण बहुत अधिक बढ़ गया है। पुरुष उपयोगी सामान का विज्ञापन भी महिलाओं के द्वारा किया जा रहा है। जूते के विज्ञापन में जूते को न दिखाकर लड़कियों के मिनी स्कर्ट की ओर इशारा किया जाता है। ऐसे कई विज्ञापन है जो उत्पाद को कम फोकस करके महिलाओं के अंगों को दिखाने में लगे रहते हैं।

जो भी हो आज विज्ञापन हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। यह औद्योगिक संस्कृति की देन है साथ ही ग्लोबल उद्योग भी। विज्ञापन से प्रभावित होकर उपभोक्ता एक ब्रांड से दूसरे ब्रांड की ओर भागता फिरता है। लेकिन इसका उसे कोई लाभ नहीं मिलता। इसप्रकार वह अनावश्यक रूप से धन का दुरुपयोग करता है। हमारे रहन और मानसिकता पर गहरा प्रभाव डालता है। आप क्या खाएँगे, क्या पहनेंगे, कैसे घर में रहेंगे कहाँ पढ़ेंगे, कहाँ नौकरी करेंगे, कहाँ विवाह करें, ये सब विज्ञापन कहते हैं। इसी प्रकार जन्म से लेकर मृत्यु तक विज्ञापन के जाल में हम फँस जाते हैं।

सोचें

- प्रौद्योगिकी और विज्ञापन से क्या संबन्ध है?
- "अगर यह दुनिया भी एक विज्ञापन होती है।" लेखक इसप्रकार क्यों कहते हैं?
- आजकल विज्ञापनों में नारी शोषण ज़्यादा है। चर्चा करें।
- "विज्ञापन एक अभिशाप है या वरदान" वाद-विवाद चलाएँ।
- सेल्लुलार सेलफोन कंपनी ने सभी आधुनिक सुविधावाली मोबाइल फोन बाज़ार में लेना चाहते हैं। उचित विज्ञापन तैयार करें।

भाषा की बात

पढ़ें

- 'विज्ञापन ने समाचार-पत्र, रेडियो और टेलिविज़न में अपना साम्राज्य बनाया।'
- 'विज्ञापन का महत्व बढ़ता चला गया।'

ऐसे भूतकाल के वाक्यों को छाँट कर लिखें और उनके अलग-अलग रूपों पर चर्चा करें।

शब्दार्थ

शब्दार्थ

पौधों की पीढ़ियाँ

बरगद का पेड़ - പേരാൽ, Banyan Tree
आगी - അഗ്നി, Fire
आँधी - കൊടുങ്കാറ്റ്, Storm
फिकर - ചിന്ത, വിചാരം, thought
छत्र-छाया - ആശ്രയം, രക്ഷ, protection
रुष्ट - കോപം, anger
बदकिस्मत - ദുർഭാഗ്യവാൻ, unlucky
खतरा - അപകടം, danger
बौना - പൊക്കം കുറഞ്ഞ, dwarf
उद्दण्ड - തന്നിഷ്ടക്കാരായ, rude
जुल्म - കുറ്റം, offence
काँटा - മുള്ള്, thorn
कुल्हाडी - കോടാലി, axe
ठूँठ - മരക്കുറ്റി, snag

बूढ़ा कुत्ता

स्मरण - സ്മരണ, memory
घटना - സംഭവം, event
संकेत - സൂചന, hint
बरामदा - വരാന്ത, Varandah
पूँछ हिलाना - വാലാട്ടുക, tail wag
खौरा - ചൊറി, itch
बदबू - ദുർഗന്ധം, foul smell
झाड़ू - ചൂൽ, broom stick
छड़ी - വടി, stick
खड़ाऊ - ചപ്പൽ, wooden shoe
दुत्कार-फटकार - ശകാരം, reprimand
कुचलना - ചവിട്ടിമെതിക്കുക, to trample
बंदूक - തോക്ക്, gun
खबर - വാർത്ത, message
दुपहरिया - ഉച്ച, noon
पिल्ला - നായ്ക്കുട്ടി, puppy
हाँफना - കിതയ്ക്കുക, to breathe heavily
धुलि-धूसरित - പൊടിയണിഞ്ഞ, filled with dust
दाग - പൊള്ളിയ പാട്, mark made by burning
भौंकना - കുരയ്ക്കുക, to bark
बरबाद - നശിച്ച, lost
संतरी - കാവൽക്കാരൻ, watcher
भरोसा - വിശ്വാസം, faith
चक्कर लगाना - ചുറ്റിത്തിരിയുക, to revolve
डांटना - ശകാരിക്കുക, to rebuke
नज़दीक - സമീപം, near about
इत्मीनान - ശാന്തമായ, Leisurely
कसूर - ദോഷം, fault
विदागिरी - യാത്രയയപ്പ്, farewell
रोशनी - പ്രകാശം, light
सेंध - തുരങ്കം, hole made in a wall for burglary.

कतरिया - സൂത്രത്തിൽ രക്ഷപ്പെടുക, to slink away.

वारा-न्यारा - അന്തിമ നിർണ്ണയം, final settlement of issues

पालकी - പല്ലക്ക്, palanquin

बैलगाड़ी - കാളവണ്ടി, Bullock cart

अधिगम उपलब्धियाँ

- कविता पढ़कर आशय ग्रहण करता है।
- आधुनिक सामाजिक परिस्थिति पर चर्चा करता है।
- कविता पढ़कर अपना मत प्रस्तुत करता है।
- कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार करता है।
- वैश्वीकरण संबन्धी अन्य कविताओं का परिचय पाता है।
- संस्मरणात्मक निबन्ध की विशेषताएँ पहचानता है।
- निबन्ध पढ़कर आशय ग्रहण करता है और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है।
- रपट तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- 'लग' के प्रयोग की अवधारणा प्राप्त करता है।
- 'परसर्ग' के भिन्न-भिन्न प्रयोग की अवधारणा प्राप्त करता है।
- लेख पढ़कर आशय ग्रहण करता है।
- वाद-विवाद में भाग लेकर अपना मत प्रकट करता है।
- विज्ञापन तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- भूतकाल की विशेषताएँ समझता है।

इकाई दो

रहीम, कबीर, तुलसी

कश्मीरी सेब

‘पा’

दोहे

रहीम... कबीर... तुलसी...

रहीम

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियाहिं न पान।
कहिं रहीम परकाज हित, संपत्ति संचहि सुजन।
रहिमन वे नर मर चुके, जो कछु माँगन जाहिं।
उससे पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।

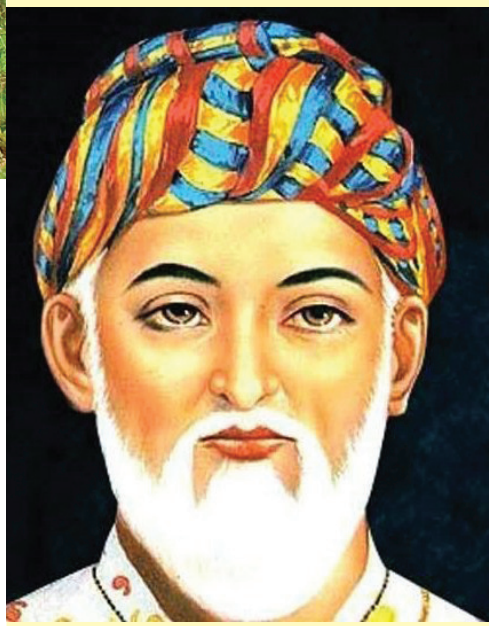

रहीम अकबरबादशाह के नवरत्नों में से एक थे। उनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। वे कुशल राजनीतिज्ञ, योग्य प्रशासक और सेनापित थे। सतसई, नगर शोभा, बरवै, रहीम काव्य, बरवै नायिका भेद आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

कबीर

तेरा साई तुझ में, ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिरि फिरि ढूँढे घास।।
जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पडी रहन दो म्यान।।

हिन्दी भक्ति साहित्य के निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवि हैं कबीरदास। उनकी वाणी का संग्रह 'बीजक' है। उन्होंने अपने समय में प्रचलित सारे अनाचारों और अंधविश्वासों का खण्डन किया था।

तुलसी

तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि-फलहि पर हेत।
इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत।।
मुखिया मुख सों चाहिए, खान-पान को एक।
पालै-पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।।

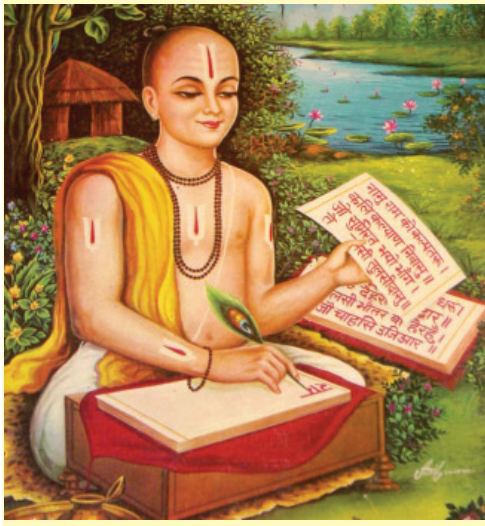

पुहपन	- फूल
बास	- सुगन्ध
मिरिग	- मृग (हिरण)
तरवार	- तलवार
इतते	- इससे
पाहन	- पत्थर
मुखिया	- नेता
तरुवर	- श्रेष्ठ वृक्ष
परहेत	- दूसरों के लिए
सुअंब तरु	- आम का पेड़
परकाज हित	- परोपकार के लिए
कहिं	- कहता है

सगुण भक्ति के राम भक्तिधारा के कवि है तुलसीदास। वे भारतीय संस्कृति के उपासक हैं। रामचरितमानस, विनयपत्रिका, गीतावली, दोहावली आदि प्रमुख रचनाएँ हैं। उनकी रचनाओं में सामाजिक और नैतिक आदर्शों का स्वर मुखरित है।

सुजान	-	सज्जन
संचहि	-	संचय करते हैं
कछु	-	कुछ
उनते पहले	-	उनसे पहले
मुए	-	मर चुके
निकसात	-	निकलता
साई	-	ईश्वर

ये आशयवाले दोहे ढूँढकर लिखें।

- मानव के अंदर के सार्थक ईश्वर को बाहर खोजना निरर्थक है।
- प्रकृति मानवता को महान पाठ पढ़ाती है। सज्जन लोग उसका आचरण करते हैं।
- हमें स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों का उपकार करना चाहिए।
- दूसरों से माँगना और किसी के माँगने पर कुछ नहीं देना, दोनों निंदनीय है।
- ज्ञान का ही महत्व है, बाकी सब नगण्य है।
- एक आदर्शनिष्ठ नेता समाज के हित में कार्यरत होना चाहिए।

सोचें... समझें... लिखें।

- तरुवर का उदाहरण देकर रहीम क्या कहना चाहते हैं?
- भीख माँगनेवालों और भीख न देनेवालों के बारे में रहीम की राय क्या है?
- मंदिर-मसजिद भटकनेवालों के बारे में कबीरदास का मत क्या है?
- 'मोल करो तरवार का पडी रहन दो म्यान' - 'ज्ञान' के बारे में कबीरदास का विचार प्रकट करें।
- तुलसीदास के अनुसार मुखिया के लक्षण क्या है?
- तुलसीदास ने संत को सुअंबतरु क्यों कहा?

गतिविधि

- रहीम, कबीर और तुलसी के अन्य पाँच-पाँच दोहों का संकलन करके लिखें।
- "जाति न पूछों साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान मोल करो तरवार का पडी रहन दो म्यान" वर्तमान सामाजिक स्थिति में इस दोहे की प्रासंगिकता पर चर्चा करें।
- "मुखिया मुखसों चाहिए, खान-पान को एक पालै-पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक" वर्तमान राजनैतिक परिवेश में यह दोहा प्रासंगिक है। चर्चा करें और अपना मत प्रकट करें।
- रहीम, कबीर और तुलसी के निर्धारित पाठ से भिन्न पाँच-पाँच दोहों का संकलन तैयार करें।

कहानी

कश्मीरी सेब

प्रेमचन्द

कल शाम को चौक में दो-चार जस्सी चीज़ें खरीदने गया था। पंजाबी मेवाफरोशों की दूकानें रास्ते ही में पड़ती हैं। एक दूकान पर बहुत अच्छे रंगदार, गुलाबी सेब सजे हुए नज़र आये। जी ललचा उठा। आजकल शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दों में विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है। टमाटो को पहले कोई सेंत में भी न पूछता था। अब टमाटो भोजन का आवश्यक अंग बन गया है। गाजर भी पहले गरीबों के पेट भरने की चीज़ थी। अमीर लोग तो उसका हलवा ही खाते थे; मगर अब पता चला है कि गाजर में भी बहुत विटामिन है, इसलिए गाजर को भी मेज़ों पर स्थान मिलने लगा है। और सेब के विषय में तो यह कहा जाने लगा है कि एक सेब रोज़ खाइए तो आपको डॉक्टरों की ज़रूरत न रहेगी। डॉक्टर से बचने के लिए हम निम्नकौडी तक खाने को तैयार हो सकते हैं। सेब तो रस और स्वाद में अगर आम से बढ़कर नहीं है तो घटकर भी नहीं। हाँ, बनारस के लंगडे और लखनऊ के दसहरी और बंबई के अल्फांसो की बात दूसरी है। उनके टक्कर का फल तो संसार में दूसरा नहीं; मगर उनमें विटामिन और प्रोटीन है या नहीं, है तो काफ़ी है या नहीं, इन विषयों पर अभी किसी पश्चिमी डॉक्टर की व्यवस्था देखने में नहीं आयी। सेब को यह व्यवस्था मिल चुकी है। अब वह केवल स्वाद की चीज़ नहीं है, उसमें गुण भी है। हमने दूकानदार से मोल-भाव किया और आधा सेर सेब माँगे।

दूकानदार ने कहा – बाबूजी बड़े मज़ेदार सेब आये हैं, खास कश्मीर के। आप ले जाएँ, खाकर तबीयत खुश हो जाएगी। मैंने रुमाल निकालकर उसे देते हुए कहा – चुन-चनकर रखना।

दूकानदार ने तराजू उठाई और अपने नौकर से बोला - लौंडे आधा सेर कश्मीरी सेब निकल ला। चुनकर लाना।

लौंडा चार सेब लाया। दूकानदार ने तौला, एक लिफाफे में उन्हें रखा और रूमाल में बाँधकर मुझे दे दिया। मैंने चार आने उसके हाथ में रखे।

घर आकर लिफाफा ज्यों-का-त्यों रख दिया। रात को सेब या कोई दूसरा फल खाने का कायदा नहीं है। फल खाने का समय तो प्रातःकाल है। आज सुबह मुँह-हाथ धोकर जो नाश्ता करने के लिए एक सेब निकाला, तो सड़ा हुआ था।

एक रुपये के आकार का छिलका गल गया था। समझा, रात को दूकानदार ने देखा न होगा। दूसरा निकाला। मगर यह आधा सडा हुआ था। अब सन्देह हुआ, दूकानदार ने मुझे धोखा तो नहीं दिया है। तीसरा सेब निकाला। यह सडा तो न था; मगर एक तरफ दबकर बिल्कुल पिचक गया। चौथा देखा। वह यों तो बेदाग था; मगर उसमें एक काला सूराख था जैसा अक्सर बेरों में होता है। काटा तो भीतर वैसे ही धब्बे, जैसे किडहे बेर में होते हैं। एक सेब भी खाने लायक नहीं। चार आने पैसों का इतना गम न हुआ जितना समाज के इस चारित्रिक पतन का। दूकानदार ने जानबूझकर मेरे साथ धोखेबाजी का व्यवहार किया। एक सेब सडा हुआ होता, तो मैं उसको क्षमा योग्य समझता। सोचता, उसकी निगाह न पड़ी होगी। मगर चार के चारों खराब निकल जाएँ, यह तो साफ धोखा है। मगर इस धोखे देने की प्रेरणा थी। उसने माप लिया कि महाशय अपनी आँखों से काम लेनेवाले जीव नहीं है और न इतने चौकस हैं कि घर से लौटाने आएँ। आदमी बेइमानी तभी करता जब उसे अवसर मिलता है। बेइमानी का अवसर देना, चाहे वह अपने ढीलेपन से हो या सहज विश्वास से, बेइमानी में सहयोग देना है। पढ़े-लिखे बाबुओं और कर्मचारियों पर तो अब कोई विश्वास नहीं करना। किसी थाने या कचहरी या म्यूनिसिपिलटी में चले जाइए, आपकी ऐसी दुर्गति होगी कि आप बड़ी-से-बड़ी हानि उठाकर भी उधर न जाएँगे। व्यापारियों की साख अभी तक बनी हुई थी। यों तौल में चाहे छटाँक- आध-छटाँक कस ले; लेकिन आप उन्हें पाँच की जगह भूल से दस के नोट दे आते थे तो आपको घबडाने की कोई ज़रूरत न थी। आपके रुपये सुरक्षित थे। मुझे याद

है, एक बार मैंने मुहर्रम के मेले में एक खोंचेवाले से एक पैसे की रेवडियाँ ली थी और पैसे की जगह अठन्नी दे आया था। घर आकर जब अपनी भूल मालूम हुई तो खोंचेवाले के पास दौडा गये। आशा नहीं थी कि वह अठन्नी लौटाएगा, लेकिन उसने प्रसन्नचित्त से अठन्नी लौटा दी और उल्टे मुझसे क्षमा माँगी। और यहाँ कश्मीरी सेब के नाम से सड़े हुए सेब बेचे जाते हैं? मुझे आशा है, पाठक बाज़ार में जाकर मेरी तरह आँखों न बन्द कर लिया करेंगे। नहीं उन्हें भी कश्मीरी सेब ही मिलेंगे?

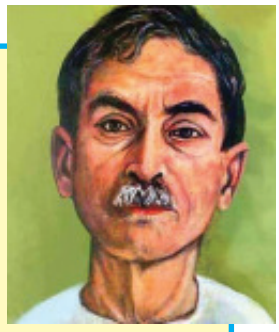

प्रेमचन्द

पूरा नाम	:	धनपतराय
जन्म	:	30 जुलाई 1880
जन्मस्थान	:	लमही, वाराणसी (उत्तरप्रदेश)।
उपन्यास	:	गोदान, निर्मला, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, कर्मभूमि।
नाटक	:	संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी।
कहानी	:	परीक्षा, बड़े घर की बेटी, मैकू, कफन, पत्नी के पति, दूसरी शादी, पंचपरमेश्वर, प्रायश्चित।
निबन्ध	:	कुछ विचार।
निधन	:	8 अक्तूबर 1936

सोचें ..... लिखें।

- "आजकल शिक्षित समाज में विटामिन या प्रोटीन के शब्दों में विचार करने की प्रवृत्ति हो गई हैं" किसकी ओर इशारा करते हैं। चर्चा करें।
- "आदमी बेइमानी तभी करता जब उसे अवसर मिलता है। बेईमानी का अवसर देना, चाहे वह अपने ढीलेपन से हो या सहज विश्वास से, बेईमानी में सहयोग देना है....." इस बेईमानी पर आप क्या कदम उठाना चाहेंगे? इस विषय पर अपने मित्र के नाम एक पत्र लिखें।
- आज के ज़माने में 'कश्मीरी सेब' कहानी की प्रासंगिकता कहाँ तक हैं? चर्चा करके टिप्पणी लिखें।
- कश्मीरी सेब के खरीदने पर भी लेखक वह खा नहीं सके। उसके मन के विचार क्या क्या होंगे?
- लेखक के उस दिन की डायरी तैयार करें।
- अठन्नी वापस लेने के लिए लेखक खोंचेवाले के पास गया। इस प्रसंग में दोनों के बीच के संभावित वार्तालाप लिखें।
- 'जागो ग्राहक जागो' इस विषय पर एक भाषण तैयार करें।

भाषा की बात

- देखें, दूकानदार ने कहा।
  दूकानदार ने तराजू उठाई।
  इस प्रकार 'ने' के प्रयोगवाले अन्य वाक्य इस कहानी से चुन कर लिखें।
  'ने' के प्रयोग पर चर्चा करें।

आइए..... गाएँ यह फिल्मी गीत

बहारों फूल बरसाओ
मेरा मेहबूब आया है (2)
हवाओं रागिनी गाओ
मेरा महबूब आया है (2)
ओ लाली फूल की मेहंदी लगा इन गोरे हाथों में
उतर आ ऐ घटा काजल, लगा इन प्यारी आँखों में
सितारों माँग भर जाओ
मेरा महबूब आया है (2)
नज़ारों हर तरफ अब तान दो इक नूर की चादर
बडा शर्मीला दिलबर है, चला जाए न शरमाकर
ज़रा तुम दिल को बहलाओ
मेरा महबूब आया है (2)
सजाई है जवाँ कलियों ने अब ये सेज उल्फ़त की
इन्हें मालूम था आएगी इक दिन ऋतु मुहब्बत की
फ़िज़ाओं रंग बिखराओ
मेरा महबूब आया है (2)
बहारों.....

(फ़िल्म : सूरज, संगीतकार : शंकर जयकिशन, गीतकार : हसरत जयपुरी, गायक : मोहम्मद रफ़ी)

फिल्म समीक्षा

सिनेमा अभिनय-प्रधान कला है। इसमें अनुभूतियों और टेक्नोलॉजी का सम्मिलन है। कथा, संगीत, संवाद, नृत्य, अभिनय आदि अनुभूति पक्ष के अंतर्गत है। छायांकन, संपादन, कला, ध्वन्यांकन आदि तकनीक या टक्नॉलेजी के अन्तर्गत आते हैं। फिल्मों में इन सबों के निर्वाह केलिए अलग-अलग अभ्यस्त लोग हैं। फिल्म समीक्षा में समीक्षक को ये सारी चीज़ों की जानकारी होनी चाहिए। इसके आधार पर फिल्म के गुण-दोष का विवेचन करना ही फिल्मी समीक्षा है।

पा

निर्माता	-	सुनील मनचंदा, ए.बी.कॉर्प
निदेशक	-	आर.बाल्की
गीत	-	स्वानन्द किरकिरे
संगीत	-	इलयराजा
कलाकार	-	अमिताभ बच्चन, अभिषेक बच्चन, विद्या बालन, परेश रावल, अरुन्धती नग।

'पा' फिल्म 'प्रोजेरिया' नामक बीमारी से पीड़ित एक बालक की कथा है। इस बीमारी में व्यक्ति अपनी उम्र से कहीं ज्यादा उम्रवाला दिखाई देता है। इस फिल्म का नायक है तेरह वर्षीय ऑरो। प्रोजेरिया के कारण उसकी हालत पैंसठ वर्षीय वृद्ध जैसी रहती है। पर दिमागी तौर 'ऑरो' एक मेधावी छात्र है। इसलिए हर उसे पसंद करते हैं।

'ऑरो' के घर में उसकी मम्मी और नानी है। उसे अपने पिता के बारे में कोई जानकारी नहीं। स्कूल के पुरस्कार वितरण समारोह में उसका मूल्यांकन युवा नेता अमोल अर्ति से होता है। उसको ऑरो से पहले सहानुभूति थी, लेकिन बाद में वह ऑरो की दिमागी क्षमता पर प्रभावित हो जाता है। दोनों अक्सर नेट पर चैटिंग करते हैं। बाद में अपनी माँ से पता चला कि अमोल उसके पिता है। ऑरो की कोशिश से उनके माता-पिता फिर एक हो गये।

निदेशक बाल्की ने छोटे-छोटे दृश्यों से फिल्म में हास्य, व्यंग्य और इमोशन पैदा किये हैं। रोने-धोने के काफी दृश्य इसमें शामिल कर सकते थे। पर निदेशक ने नियन्त्रित रूप से हर दृश्य को प्रस्तुत किया है। ऑरो के किरदार को जिस तरह से हल्के-फुल्के अंदाज़ में पेश किया गया है वही इस फिल्म को खास बनाता है।

फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता अमिताभ बच्चन का अभिनय है। अभिषेक बच्चन और विद्या बालन का अभिनय भी प्रशंसनीय है। ऑरो की नानी के रूप में अरुन्धती नाग का अभिनय भी बेहतरीन है।

इलयराजा का संगीत दिल को छू लेता है। फिल्म निर्माता सुनीला मनचंदा और ए.बी.कार्प बधाई के पात्र है जिन्होंने इस तरह की एक अलग फिल्म बनाई।

'पा' में ऑरो का मेकअप बहुत आकर्षक है सभी अर्थों में यह फिल्म सफल हुई है।

सोचें ..... लिखें।

- 'पा' फिल्म का कौन-सा पात्र आपको पसंद आया? उस पात्र की विशेषताएँ लिखिए।
- इस फिल्म की पटकथा पर चर्चा करें और टिप्पणी लिखें।
- "सिनेमा निदेशक की कला है" 'पा' फिल्म के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत करें।
- अपनी एक मन पसंद फिल्मी की समीक्षा तैयार करें।

शब्दार्थ

पुहुपन	-	फूल, Flower	परकाज हित-		परोपकार के लिए, Charity
बास	-	सुगन्ध, Fragrant	कहिं	-	कहता है, Says
मिरिग	-	मृग (हिरण), Deer	सुजान	-	सज्जन, Gentleman
नरवार	-	तलवार, Sword	संचहि	-	संचय करते हैं, Accumulating
इतते	-	इससे, By this	कछु	-	कुछ, Some
पाहन	-	पत्थर, Stone	उनते पहले	-	उनसे पहले
मुखिया	-	नेता, Leader	मुए	-	मर चुके, Dead
तरुवर	-	श्रेष्ठ वृक्ष, Tree	निकसात	-	निकलता, Out
परहेत	-	दूसरों के लिए, For others	साई	-	ईश्वर, God
सुअंब तरु	-	आम का पेड़, Mango Tree			

कश्मीरी सेब

मेवाफरोश	-	ഉണങ്ങിയ പഴം വിൽക്കുന്നവൻ, Dried fruit seller	तबीयत	-	ആരോഗ്യം, health
			लौंडा	-	പയ്യൻ, boy
ललचना	-	പ്രലോഭിതനാകുക, to be tempted	तौलना	-	തൂക്കുക, to weigh
सेंत	-	സൗജന്യമായി, without cost	लिफ़ाफ़ा	-	കവർ, envelope
गाजर	-	കാരറ്റ്, carrot	रूमाल	-	ടൗവൽ, scarf
मज़ेदार	-	രസിക്കാവുന്ന, enjoyable	कायदा	-	നിയമം, rule

नाश्ता - ലഘുഭക്ഷണം, light repast

सड़ा - ചീഞ്ഞ, decomposed

छिलका - തോട്, peel

धोखा - വഞ്ചന, cheat

पिचक - ചുളുങ്ങിയ, to be squeezed

सूराख - ദ്വാരം, hole

निगाह - ദൃഷ്ടി, look

महाशय - Sir

चौकस - കരുതലുള്ള, alert

बेइमानी - അധർമ്മം, dishonesty

ढीलेपन - അയഞ്ഞ, looseness

कचहरी - കച്ചേരി, ന്യായാലയം, Court

साख - തെളിവ്, evidence

छटाँक - ഒരു സേറിന്റെ 16ൽ ഒരു ഭാഗം, one-six tenth of a seer (about 50 gms)

रेवडियाँ - എള്ള് , A kind of crisp sweet meat

अठन्नी - എട്ടണത്തുട്ട്, half rupee coin

पा

संवाद - സംഭാഷണം, dialogue

ध्वन्यांकन - ശബ്ദആലേഖനം, sound recording

समीक्षक - നിരൂപകൻ, analyst

निर्देशक - സംവിധായകൻ, Director

किरदार - കഥാപാത്രം, Character

अंदाज़ - രീതി, style

बेहतरीन - ഏറ്റവും നല്ലത്, best

अधिगम उपलब्धियाँ

- रहीम, कबीर, तुलसी के दोहों से परिचय प्राप्त करता है।
- कहानी पढ़कर उसकी प्रासंगिकता पर विचार करके टिप्पणी लिखने की क्षमता प्राप्त करता है।
- पत्र तैयार करने की क्षमता-विकास होता है।
- डायरी तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- वार्तालाप तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- भाषण तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- 'ने' के प्रयोग की विशेषताओं पर जानकारी प्राप्त करता है।
- फिल्मी समीक्षा तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- पटकथा के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करता है।

इकाई तीन

अब चिड़ियाँ कहाँ रहेगी ?

सिलिया

कारतूस

कविता

कोई भी जीव अपने पर्यावरण से अलग जी नहीं सकते। जीव-जंतु और प्रकृति एक सिक्के के दो पहलू हैं। धरती सुरक्षित रहेगी तो जीव भी सुरक्षित रह जाएगा। धरती और जीव का रिश्ता माँ और संतान का है।

अब चिड़ियाँ कहाँ रहेगी?

महादेवी वमा

आँधी आई ज़ोर शोर से,
डालें टूटी हैं झकोर से।
उडा घोंसला अंडे फूटे,
किससे दुख की बात कहेगी।
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

चिड़िया क्यों दुखी है?

हमने खोला अलमारी को,
बुला रहे हैं बेचारी को।
पर वो चीं-चीं कर्राती है
घर में तो वो नहीं रहेगी।
घर में पेड़ कहाँ से लाएँ,
कैसे यह घोंसला बनाएँ!
कैसे फूटे अंडे जोड़े,
किससे यह सब बात कहेगी।
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

'घर में तो वो नहीं रहेगी' - क्यों?

'अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी'? चिड़िया की विविशता का कारण क्या है।

- पेड़ काटने से पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है। चर्चा करें और अपना विचार प्रकट करें।
- कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।
- संगोष्ठी चलाएँ।
  "जीवजंतुओं पर निर्वनीकरण का असर" (Deforestation)

नाम	:	महादेवी वर्मा
जन्म	:	26 मार्च 1907
मृत्यु	:	11 सितंबर 1987
विधा	:	गद्य और पद्य
साहित्यिक आन्दोलन	:	छायावाद व रहस्यवाद
कविता संग्रह	:	नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, प्रथम आयाम, अग्निरेखा,यामा
गद्य साहित्य	:	अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ (रेखाचित्र), पथ के साथी, मेरा परिवार (संस्मरण)
पुरस्कार व सम्मान	:	यामा (ज्ञानपीठ पुरस्कार) नीरजा (सक्सेरिया पुरस्कार) 1988 में मरणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया।

ये पंक्तियाँ पढ़ें।

किससे दुख की बात कहेगी।
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी।

भविष्यत्कालीन क्रियाओं पर चर्चा करें।

- रेखांकित क्रियाओं पर ध्यान दें। ऐसी क्रियाएँ कविता से चुनकर लिखें।

घर में पेड़ कहाँ से लाएँ।
कैसे यह घोंसला बनाएँ।

कहेगी - कहे
रहेगी - रहे
कहेंगी - कहें
रहेंगी - रहें
लाएँगे - लाएँ
बनाएँगे - बनाएँ

- सामान्य भविष्यतकाल और संभाव्य भविष्यतकाल में क्या-क्या अंतर हैं। चर्चा करें।

सामान्य भविष्यतकाल	संभाव्य भविष्यतकाल

कहानी

सामाजिक न्याय एक आदर्श अवधारणा है। देश आज़ाद होता है पर दलितों और स्त्रियों के लिए समाज एक अलग ही न्याय व्यवस्था बनाता है। दलित स्त्रियों केलिए दलित होने के नाते और स्त्री होने के कारण शोषण और भी गहरा हो जाता है। पुरुष समाज की इस जकड़न और जातिगत अन्याय के खिलाफ सशक्त प्रतिरोध सुशीला टाकभौरे की कहानी 'सिलिया' में मिलता है।

सिलिया

सुशीला टाकभौरे

नानी प्यार से उसे सिलिया ही कहती थीं। बड़े भैया ने अपनी शिक्षा प्राप्त सूझबूझ के साथ उसका नाम शैलजा रखा था। माँ-पिताजी की वह सिल्ली रानी थी।

सिलिया ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ रही थी। साँवली-सलोनी, मासूम-भोली सरल और गंभीर स्वभाववाली सिलिया स्वस्थ देह के कारण अपनी उम्र से कुछ ज़्यादा ही लगती थी। इसी वर्ष १९६० की सबसे अधिक विशिष्ट घटना घटी, हिन्दी अखबार 'नई दुनिया' में विज्ञापन छपा - 'शूद्र वर्ण की वधु चाहिए.....।'

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के जाने माने युवा नेता सेठी जी अछूत कन्या के साथ विवाह करके समाज के सामने एक आदर्श रखना चाहते थे। उसकी केवल एक ही शर्त थी कि लड़की कम-से-कम मैट्रिक हो।

मध्यप्रदेश के होशंगबाद जिले के इस छोटे गाँव में भी विज्ञापन को पढ़कर हलचल मची थी। गाँव के पढ़े-लिखे लोगों ने, ब्राह्मण-बनियों ने सिलिया की माँ को सलाह दी, "तुम्हारी बेटी तो मैट्रिक पढ़ रही है, बहुत होशियार और समझदार भी है, तुम उसके फोटो, नाम, पता और परिचय लिखकर भेज दो। तुम्हारी बेटी के तो भाग्य खुल जाएँगे, राज करेगी। सेठी जी बहुत बड़े आदमी हैं, तुम्हारी बेटी की किस्मत अच्छी है....."

सिलिया की माँ अधिक जिरह में न पड़ केवल इतना ही कहतीं, "हाँ भैया जी.... हाँ दादा जी.... हाँ बाई जी, सोच-विचार करेंगे।"

सिलिया के साथ पढ़नेवाली सहेलियाँ उसे छेड़ती, हँसती और मज़ाक करतीं, मगर सिलिया इस बात का कोई सिर-पैर नहीं समझ पाती। उसे बड़ा अजीब लगता, "क्या कभी ऐसा भी हो सकता है?"

इस विषय में घर में भी चर्चा होती। पड़ोसी और रिश्तेदार कहते, "फोटो और नाम पता भेज दो।"

तब सिलिया की माँ अपने घरवालों को अच्छी तरह समझाकर कहती, "नहीं भैया, यह सब बड़े लोगों के चोंचले हैं। आज सबको दिखाने के लिए हमारी बेटी के साथ शादी कर लेंगे और कल छोड़ दिया तो हम गरीब लोग उनका क्या कर लेंगे? अपनी इज्जत अपने समाज में रहकर ही हो सकती है। उनकी दिखावे की चार दिन की इज़्जत हमें नहीं चाहिए। हमारी बेटी उनके परिवार और समाज में वैसा मान-सम्मान नहीं पा सकेगी, न ही फिर हमारे घर की ही रह जाएगी, न इधर की न उधर की, हमसे भी दूर कर दी जाएगी। हम तो नहीं देवें अपनी बेटी को। हम उसका खूब पढ़ाएँगे-लिखाएँगे। उसकी किस्मत में होगा तो इससे ज्यादा मान-सम्मान वह खुद पा लेगी।"

बारह साल की सिलिया डरी, सहमी-सी एक कोने में खड़ी थी और मामी अपनी बेटी मालती को बाल पकड़कर मार रही थी, साथ ही ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कहती जा रही थी, "क्यों री, तुझे नहीं मालूम, अपन वा कुएँ से पानी नहीं

भर सके हैं? क्यों चढ़ी तू वा कुआँ पर, क्यों रस्सी-बाल्टी को हाथ लगाया?" और वाक्या पूरा होने के साथ ही दो-चार झापड़, घूसे और बरस पड़ते भालती पर। बेचारी मालती, दोनों बाहों में अपना मुँह छिपाए चीख-चीखकर रो रही थी। साथ ही कहती जा रही थी, "ओ बाई, माफ कर दो, अब ऐसा कभी नहीं करूँगा।" मामी का गुस्सा और मालती का रोना देखकर सिलिया अपराधबोध का अनुभव कर रही थी। अब अपनी सफ़ाई में बहुत कुछ कहना चाहती थी, मगर इस घमासान प्रकरण में उसकी आवाज़ धीमी पड़ जाती। मामी को थोड़ा शान्त होते देख सिलिया ने साहस बटोरा, "मामी मैंने तो मालती को मना किया था, मगर वह मानी ही नहीं। कहने लगी जीजी प्यास लगी है, पानी पिएँगे।" मैंने कहा, "कोई देख लेगा?" तो कहने लगी, "अरे जीजी भरी दोपहरी में कौन देखने आएगा, बाज़ार से यहाँ तक दौड़ते आए हैं, प्यास के मारे दम निकल रहा है।"

मामी बिफरकर बोली, "घर कितना दूर था, मर तो नहीं जाती। मर ही जाती तो अच्छा रहता, इसके कारण उसे कितनी बातें सुनानी पडी।" मामी ने अफ़सोस के साथ अपना माथा ठोंकते हुए कहा था, "हे भगवान, तूने हमारी कैसी जात बनाई।"

सिलिया नीचे देखने लगी। सच बात थी। गाडरी मुहल्ला के जिस कुएँ से मालती ने पानी निकालकर पिया था, वहाँ से बीस-पच्चीस कदम पर ही मामा-मामी का घर था, जिसकी रस्सी-बाल्टी और कुएँ को छूकर मालती ने अपवित्र कर दिया था। वह स्त्री बकरियों के रेवड़ पालती थी। गाडरी मुहल्ले के अधिकांश घरों में भेड़-बकरियों को पालने का और उन्हें बेचने-खरीदने का व्यवसाय किया जाता था। गाडरी मुहल्ले से लगकर ही आठ-दल घर भंगी समाज के थे। सिलिया के मामा-मामी यहीं रहते थे। मालती सिलिया की ही हमउम्र थी। बस साल-छह महीना छोटी होगी, मगर हौसला और निडरता उसमें बहुत ज्या थे। जिस काम को न करने की नसीहत उसे दी जाए, उसी काम को करके वह खतरे का सामना करना चाहती थी। सिलिया गंभीर और सरल स्वभाव की आज्ञाकारी लड़की थी।

मालती को रोता हुआ देख उसे खराब ज़रूर लगा, मगर वह इस बात को समझ रही थी कि इसमें मालती की ही गलती है, "जब हमें पता है कि हम अछूत दूसरों के कुएँ से पानी नहीं ले सकते तो फिर वहाँ जाना ही क्यों?" वह बकरीवाली कैसे चिल्ला रही थी, "औरी बाई, दौड़ो री, जा मोड़ी को समझाओ.... देखो तो, मना करने के बाद भी कुएँ से पानी भर रही है। हमारी रस्सी-बाल्टी खराब कर दई जाने.....।" और मामी को उसने कितनी बातें सुनाई थीं, "क्यों बाई, जई सिखाओं हो तुम अपने बच्चों को, एक दिन हमारे मुड़ पर मूतने को कह देना। तुम्हारे नज़दीक रहते हैं तो का हमारा कोई धरम-करम नहीं है? का मरजी है तुम्हारी साफ़-साफ़ कह दो।" मामी गिड़गिड़ा रही थी, "बाई जी, माफ कर दो। इतनी बड़ी हो गई, मगर अकल नहीं आई इसको। कितना तो मारूँ हूँ, फिर भी नहीं समझे।" और मामी वहीं से मालती को मारती हुई घर लाई थी।

"बेचारी मालती"। सिलिया सोच रही थी कि भगवान उसे जल्दी ही अक्ल दे देंगे, तब वह ऐसे काम नहीं किया करेगी।

इसके एक साल पहले की बात है - पाँचवीं कक्षा के टूर्नामेण्ट हो रहे थे। खेल-कूद की स्पर्धाओं में उसने भी भाग लिया था। अपने कक्षा-शिक्षक और सहपाठियों के साथ वह तहसील के स्कूल में गई थी। उसकी स्पर्धाएँ आरंभ में ही लेने से जल्दी पूरी हो गईं। वह लंबी दौड़ और कुर्सी दौड़ स्पर्धाओं में प्रथम आई थी। वह अपनी खो-खो टीम की कैप्टन थी और खो-खो की स्पर्धा में उसी के कारण जीत मिली थी। खेल-कूद के शिक्षक गोकुल प्रसाद ठाकुर जी ने सबसे सामने उसकी बहुत तारीफ की थी। साथ ही पूछा था, "शैलजा, यहाँ तहसील में तुम्हारे रिश्तेदार रहते होंगे, तुम वहाँ जाना चाहती हो, हमें पता बताओ, हम पहुँचा देंगे।"

सिलिया मामा-मामी के घर का पता जानती थी, मगर शिक्षकों के समक्ष उनका पता बताने में उसे संकोच हो रहा था। शर्म के मारे वह नहीं बता पायी। उसने कहा, "मुझे तो यहाँ किसी का भी पता मालूम नहीं।"

तब सर ने उसकी सहेली हेमलता से कहा था, "हेमलता, इसे अपनी बहन के घर ले जाओ। शाम को सभी एक साथ गाँव लौटेंगे, तब तक यह वहाँ आराम कर लेगी।"

हेमलता ठाकुर सिलिया के साथ ही पाँचवाँ कक्षा में पढ़ती थी। उसकी बड़ी बहन का ससुराल तहसील में था। उनका घर तहसील के स्कूल के पास ही था। हेमलता सिलिया को लेकर बहन के घर आई। बहन की सास ने हँसकर उनका स्वागत किया। हेमलता को पानी का गिलास दिया। दूसरा गिलास हाथ में लेकर सिलिया से पूछने लगी, "कौन है, किसकी बेटी है, कौन ठाकुर है?" सिलिया कुछ कह न सकी।

हेमलता ने कहा, "मौसी जी मेरी सहेली है, साथ में आई है। इसके मामा-मामी यहाँ रहते हैं, मगर इसे उनका पता मालूम नहीं है।"

बहन की सास उसे ध्यान से देखते हुए विचार करती रही, फिर हेमलता से जाति के विषय में पूछा, हेमलता ने धीरे से बता दिया। उसे लगा जाति सुनकर मौसी जी एक मिनट के लिए चौंकी। पर उन्होंने अपने आप को संयम करते हुए सिलिया से पूछा, "गाडरी मुहल्ला के पास रहते हैं?"

सिलिया ने हाँ कहकर सिर झुका दिया। तब मौसी जी ने अतिरिक्त प्रेम जताते हुए कहा, "कोई नहीं बेटी, हमारा भैया तुम्हें साइकिल पे बिठा के छोड़ आएगा।" ऐसा कहते हुए मौसी जी पानी का गिलास लेकर वापिस अन्दर चली गई। सिलिया को प्यास लगी थी, मगर वह मौसीजी से पानी माँगने की हिम्मत नहीं कर सकी।

मौसी जी के बेटे ने उसे गाडरी मुहल्ले के पास छोड़ दिया था। सिलिया रास्ते भर कुढ़ती जा रही थी। आखिर उसे प्यास लगी थी तो उसने मौसी जी से पानी क्यों नहीं माँगकर पिया। तब मौसी के चेहरे पर एक क्षण के लिए आया

भाव उसकी नज़रों में तैर गया। कितना मुखौटा चढ़ाए रखते हैं ये लोग। मौसी जी जानती थीं कि उसे प्यास लगी है, पर जाति का नाम सुनकर पानी का गिलास लौटा ले गई। "क्या वे पानी माँगने पर इनकार कर देतीं?" सिलिया को यह सवाल साल रहा था।

सिलिया को देखकर मामा-मामी मालती और सभी लोग बहुत खुश थे, बड़े उल्लास के साथ मिल थे, मगर सिलिया हेमलता की बहन की ससुराल से मिली उमस को भूल नहीं पा रही थी। शाम के समय माम ने उसे स्कूल पहुँचा दिया था। सिलिया का स्वभाव चिन्तनशील बनता जा रहा था। परंपरा से अलग नए नए विचार उसके मन में आते। वह सोचती - "आखिर मालती ने कौन-सा जुर्म किया था - प्यास लगी, पानी निकालकर पी लिया।" फिर वह सोचती - "हेमलता की मौसीजी से वह पानी क्यों नहीं ले सकी थी? - और अब यह विज्ञापन उच्च वर्ग का नवयुवक, सामाजिक कार्यकर्ता जाति भेद मिटाने के लिए शूद्र वर्ण की अछूत कन्या से विवाह करेगा - यह सेठी जी महाशय का ढोंग है - आडम्बर है या सचमुच वे समाज की, परंपरा को बदलनेवाले सामाजिक क्रान्ति लानेवाले महापुरुष हैं?"

उसके मन में यह विचार भी आता कि अगर उसे अपने जीवन में ऐसे किसी महापुरुष का साथ मिला तो वह अपने समाज के लिए बहुत कुछ कर सकेगी। लेकिन क्या कभी ऐसा हो सकता है? यह प्रश्न उसके मन से हटता नहीं था। माँ के यथार्थ के आधार पर कहे गए अनुभव कथन पर उसका आस्थापूर्ण विश्वास था। मध्यप्रदेश की ज़मीन में सन् ६० तक ऐसी फस्ल नहीं उगी थी, जो एक छोटे गाँव की अछूत मानी जानेवाली भोली-भाली लड़के के मन में अपना विश्वास जगा सके। और फिर दूसरों की दया पर सम्मान? अपने निजत्व को खोकर दूसरों के शतरंज का मोहरा बनकर रह जाना, बैसाखियों पर चलते हुए जीना नहीं कभी नहीं। सिलिया सोचती - "हम क्या इतने भी लाचार हैं, आत्मसम्मान रहित है, हमारा अपना भी तो कुछ अंहभाव है। उन्हें हमारी ज़रूरत है, हमको उनकी ज़रूरत नहीं। हम उनके भरोसे क्यों रहें। पढ़ाई करूँगी, पढती रहूँगी, शिक्षा के साथ अपने व्यक्तित्व को भी बड़ा बनाऊँगी। उन सभी परंपराओं के कारणों का पता लगाऊँगी, जिन्होंने उन्हें अछूत बना दिया है। विद्या, बुद्ध और विवेक से अपने आपको ऊँचा सिद्ध करके रहूँगी। किसी के सामने झुकूँगी नहीं। न ही अपमान सहूँगी।" इन बातों का मन-ही-मन चिन्तन-मनन करती सिलिया, एक दिन अपनी माँ और नानी के सामने कहने लगी, "मैं शादी कभी नहीं करूँगी।

माँ और नानी अपनी भोली-भाली बेटी को ध्यान से देखती रही गईं। नानी खुश होकर बोली, "शादी तो एक-न-एक दिन करना ही है बेटी, मगर इसके पहले तू खूब पढ़ाई कर ले, इतनी बड़ी बन जा कि बड़ी जात के कहलानेवालों को अपने घर नौकर रख लेना।" माँ मन-ही-मन मुस्कुरा रही थी। सोच रही थी, "मेरी सिल्ली रानी को मैं खूब पढ़ाऊँगी। उसे सम्मान के लाय बनाऊँगी।'

सुशीला टाकभौंरे

जन्म	:	4 मार्च 1954
स्थान	:	बानापुरा, होरांगाबाद (म.प्र.)
शिक्षा	:	एम.ए. हिन्दी साहित्य, एम.ए.अम्बेडकर विचारधारा, बी.एड, पी.एच.डी.
कृतियाँ	:	स्वाति बूँदें और खारे मोती, यह तुम भी जानो, तुमने उसे कब पहचाना (काव्य संग्रह), हिन्दी साहित्य के इतिहास में नारी, भारतीय नारी : समाज और साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भों में (विवरण), परिवर्तन ज़रूरी है (लेख संग्रह), टूटता वहम, अनुभूति के घेरे, संघर्ष (कहानी संग्रह), हमारे हिस्से का सूरज (कविता संग्रह), नंगा सत्य (नाटक), शिकंजे का दर्द (आत्मकथा), नीला आकाश, तुम्हें बदलना ही होगा (उपन्यास)

अनुबद्ध कार्य

- सेठजी के विज्ञापन से उसकी कौन-सी मानसिकता का इशारा है?
- दलित समाज सामाजिक न्याय से वंचित है। किन-किन घटनाओं से कहानीकार ने यह व्यक्त किया है?
- सिलिया की अस्मिता पर चोट पहुँचानेवाली एक घटना पर विचार करें।
- 'यह सेठीजी महाशय का ढोंग है' आडंबर है। - इस विषय पर सिलिया के तर्क क्या क्या है?

करें..... लिखें

- शिक्षित दलित नारी अब भी अपने अस्तित्व को सुदृढ रखने केलिए संघर्षरत है। - संगोष्ठी चर्चाएँ।
- 'मामी का गुस्सा और मालती का रोना देखकर सिलिया अपराध बोध का अनुभव कर रही थी।" - सिलिया की उस दिन की डायरी तैयार करें।
- हिन्दी अखबार नहीं दुनिया में विज्ञापन छपा - 'शूद्र वर्ण की वधु चाहिए।' यह विज्ञापन कल्पना करके लिखें।

भाषा की बात

ये वाक्यांश पढ़ें

हाँ भैया जी ..... हाँ दादा जी.....

हाँ बाई जी, सोच विचार करेंगे।

इससे ज़्यादा मान-सम्मान वह खुद पा लेगी।

ओ बाई, माफ कर दो, अब ऐसा कभी नहीं करूँगा।

रेखांकित शब्दों के आधार भविष्यकालीन क्रिया पर चर्चा करें। ऐसे वाक्य कहानी से चुनकर लिखें।

एकांकी

कारतूस

हबीब तनवीर

(अंग्रेज़ इस देश में व्यापारी के भेष में आए थे। शुरू में व्यापार ही करते रहे, लेकिन उनके इरादेकेवल व्यापार करने के नहीं थे। धीरे-धीरे उनकी ईस्ट इंडिया कंपनी ने रियासतों पर कब्ज़ा जमाना शुरू कर दिया। उनकी नीयत उजागर होते ही अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से खदेड़ने के प्रयास भी शुरू हो गये।

प्रस्तुत पाठ में एक ऐसे ही जाँबाज़ के कारनामों का वर्णन है जिसका एकमात्र लक्ष्य था अंग्रेज़ों को इस देश से बाहर करना। कंपनी के हुक्मरानों की नींद हराम कर देने वाला यह दिलेर इतना निडर था कि शेर की माँद में पहुँचकर उससे दो-दो हाथ करने की मानिंद कंपनी की बटालियन के खेमे में ही नहीं आ पहुँचा, बल्कि उनके कर्नल पर ऐसा रौब गालिब किया कि उसके मुँह से भी वे शब्द निकले जो किसी शत्रु या अपराधी के लिए तो नहीं ही बोले जा सकते थे।)

पात्र : कर्नल, लेफ़्टीनेंट, सिपाही, सवार

ज़माना : सन् 1799

समय : रात्रि का

स्थान : गोरखपुर के जंगल में कर्नल कालिंज के खेमे का अंदरूनी हिस्सा। (दो अंग्रेज़ बैठे बातें कर रहे हैं, कर्नल कालिज और एक लेफ़्टीनेंट खेमे के बाहर हैं, चाँदनी छिटकी हुई है, अंदर लैंप जल रहा है।)

कर्नल : जंगल की ज़िन्दगी बड़ी खतरनाक होती है।

लेफ़्टीनेंट : हफ़्तों हो गए यहाँ खेमा डाले हुए। सिपाही भी तंग आ गये हैं। ये वज़ीर अली आदमी है या भूत, हाथ ही नहीं लगता।

कर्नल : उसके अफ़साने सुन के रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाते हैं। अंग्रेज़ों के खिलाफ़ उसके दिल में किस कदर नफ़रत है। कोई पाँच महीने हुकूमत की होगी। मगर इस पाँच महीने में वो अवध के दरबार को अंग्रेज़ी असर से बिल्कुल पाक कर देने में तकरीबन कामयाब हो गया था।

लेफ़्टीनेंट : कर्नल कालिंज ये सआदत अली कौन है?

कर्नल : आसिफ़उद्दौला का भाई है। वज़ीर अली का और उसका दुश्मन। असल में नवाबआसिफ़उद्दौला के यहाँ लड़के की कोई उम्मीद नहीं थी। वज़ीर अली की पैदाइश को साआदत अली ने अपनी मौत खयाल किया।

लेफ़्टीनेंट : मगर सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने में क्या मसलेहत थी?

कर्नल : सआदत अली हमारा दोस्त है और बहुत ऐश पसंद आदमी है इसलिए हमें अपनी आधी मुमलिकत (जायदाद, दौलत) दे दी और दस लाख रुपये नगद। अब वो भी मज़े करता है और हम भी।

लेफ़्टीनेंट : सुना है ये वज़ीर अली अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे-ज़मा को हिन्दुस्तान पर हमला करने की दावत (आमंत्रण) दे रहा है।

कर्नल : अफ़गानिस्तान को हमले की दावत सबसे पहले असल में टीपू सुल्तान ने दी फिर वज़ीर अली ने भी उसे दिल्ली बुलाया और फिर शमसुद्दौला ने भी।

लेफ़्टीनेंट : कौन शमसुद्दौला?

कर्नल : नवाब बंगाल की निस्बती (रिश्त) भाई। बहुत ही खतरनाक आदमी है।

लेफ़्टीनेंट : इसका तो मतलब ये हुआ कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहर दौड़ गई है।

कर्नल : जी हाँ, और अगर ये कामयाब हो गई तो बक्सर और प्लासी के कारनामे धरे रह जाएँगे और कंपनी

जो कुछ लॉर्ड क्लाइव के हाथों हासिल कर चुकी है, लॉर्ड वेल्जली के हाथों सब खो बैठेगी।

लेफ़्टीनेंट : वज़ीर अली की आज़ादी बहुत खतरनाक है। हमें किसी न किसी तरह इस शख्स को गिरफ़्तार कर ही लेना चाहिए।

कर्नल : पूरी एक फ़ौज लिए उसका पीछा कर रहा हूँ और बरसों से वो हमारी आँखों में धूल झोंक रहा है और इन्हीं जंगलों में फिर रहा है और हाथ नहीं आता। उसके साथ चंद जाँबाज़ हैं। मुट्ठी भर आदमी मगर ये दमखम है।

लेफ़्टीनेंट : सुना है वज़ीर अली जाती तौर से भी बहुत बहादुर आदमी है।

कर्नल : बहादुर न होता तो यूँ कंपनी के वकील को कत्ल कर देता?

लेफ़्टीनेंट : ये कत्ल का क्या किस्साहुआ था कर्नल?

कर्नल : किस्सा क्या हुआ था उसके उसके पद से हटाने के बाद हमने वज़ीर अली को बनारस पहुँचा दिया और तीन लाख रुपया सालाना वज़ीफा मुकर्रर कर दिया। कुछ महीने बाद गवर्नर जनरल ने उसे कलकत्ता (कोलकत्ता) तलब किया। वज़ीर अली कंपनी के वकील के पास गया जो बनारस में रहता था और उससे शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता में क्यूँ तलब करता है। वकील ने शिकायत की परवाह नहीं की उलटा उसे बुरा-भला सुना दिया। वज़ीर अली के तो दिल में यूँ भी अंग्रेज़ों के खिलाफ़ नफ़रत कूट-कूटकर भरी है उसने खंजर से वकील का काम तमाम कर दिया।

लेफ़्टीनेंट : और भाग गया?

कर्नल : अपने जानिसारों समेत आज़मगढ़ की तरफ़ भाग गया। आज़मगढ़ के हुक्मरां ने उन लोगों को अपनी हिफ़ाज़त में घागरा तक पहुँचा दिया। अब ये कारवाँ इन जंगलों में कई साल से भटक रहा है।

लेफ़्टीनेंट : मगर वज़ीर अली की स्कीम क्या है?

कर्नल : स्कीम ये है कि किसी तरह नेपाल पहुँच जाए। अफ़गानी हमले का इंतेजार करे, अपनी ताकत बढ़ाए, सआदत अली को उसके पद से हटाकर खुद अवध पर कब्जा करे और अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से निकाल दे।

लेफ़्टीनेंट : नेपाल पहुँचना तो कोई ऐसा मुश्किल नहीं, मुमकिन है कि पहुँच गया हो।

कर्नल : हमारी फौज़ें और नवाब सआदत अली खाँ के सिपाही बड़ी सख्ती से उसका पीछा कर रहे हैं। हमें अच्छी तरह मालमू है कि वो इन्हीं जंगलों में है। (एक सिपाही तेज़ी से दाखिल होता है)

कर्नल : (उठाकर) क्या बात है?

लेफ़्टीनेंट : दूर से गर्द उठती दिखाई दे रही है।

कर्नल : सिपाहियों से कह दो कि तैयार रहें (सिपाही सलाम करके चला जाता है)

लेफ़्टीनेंट : (जो खिड़की से बाहर देखने में मसरूफ़ था) गर्द तो ऐसी उड़ा रही है जैसे कि पूरा एक काफ़िला चला आ रहा हो मगर मुझे तो एक ही सवाल नज़र आता है।

कर्नल : (खिड़की के पास जाकर) हाँ एक ही सवार है। सरपट घोड़ा दौडाए चला आ रहा है।

लेफ़्टीनेंट : और सीधा हमारी तरफ़ आता मालूम होता है (कर्नल ताली बजाकर सिपाही को बुलाता है)

कर्नल : (सिपाही से) सिपाहियों से कहो, इस सवार पर नज़र रखें कि ये किस तरफ़ जा रहा है (सिपाही सलाम करके चला जाता है)

लेफ़्टीनेंट : शुब्हे की तो कोई गुंजाइश ही नहीं तेज़ी से इसी तरफ़ आ रहा है (टापों की आवाज़ बहुत करीब आकर रुक जाती है)

कर्नल : (बाहर से) मुझे कर्नल से मिलना है।

गोरा : (चिल्लाकर) बहुत खूब।

सवार : (बाहर से) सी।

गौरा : (अंदर आकर) हुज़ूर सवार आपस मिलना चाहता है।

कर्नल : भेज दो।

लेफ़्टीनेंट : वज़ीर अली का कोई आदमी होगा हमसे मिलकर उसे गिरफ्तार करवाना चाहता होगा।

कर्नल : खामोश रहो (सवार सिपाही के साथ अंदर आता है)

सवार : (आते ही पुकार उठता है) तन्हाई ! तन्हाई

कर्नल : साहब यहां कोई गैर आदमी नहीं है आप राज़ेदिल कह दें।

सवार : दीवार हमगोश दारद, तन्हाई।

(कर्नल, लेफ्टिनेंट और सिपाही को इशारा करता है। दोनों बाहर चले जाते हैं। जब कर्नल और सवार खेमे में तन्हा रह जाता है तो ज़रा वक्फ़े के बाद चारे तरफ़ देखकर सवार करता है।

सवार : आपने इस मुकाम पर क्यों खेमा डाला है?

कर्नल : कंपनी का हुक्म है कि वज़ीर अली को गिरफ़्तार किया जाए।

सवार : लेकिन इतना लवलश्कर क्या मायने?

कर्नल : गिरफ़्तारी में मदद देने के लिए।

सवार : वज़ीर अली की गिरफ्तारी बहुत मुश्किल है साहब।

कर्नल : क्यों?

सवार : वो एक जाँबाज़ सिपाही है।

कर्नल : मैंने भी यह सुन रखा है। आप क्या चाहते हैं?

सवार : चंद कारतूस।

कर्नल : किसलिए?

सवार : वज़ीर अली को गिरफ्तार करने के लिए।

कर्नल : ये लो दस कारतूस।

सवार : (मुसकराते हुए) शुक्रिया।

कर्नल : आपका नाम?

सवार : वज़ीर अली। आपने मुझे कारतूस दिए इसलिए आपकी जान बख्शी करता हूँ। (ये कहकर बाहर चला जाता है, टापों का शेर सुनाई देता है। कर्नल एक सन्नाटे में है। हक्का-बक्का खड़ा है कि लेफ़्टिनेंट अंदर आता है।)

लेफ्टिनेंट : कौन था?

कर्नल : (दबी ज़बान से अपने आप से कहता है) एक जाँबाज़ सिपाही।

सोचें ..... लिखें।

- वज़ीर अली के अफ़साने सुनकर कर्नल को रॉबिनहुड की याद क्यों आ जाती थी?
- साआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या मकसद था?
- कंपनी के वकील का कत्ल करने के बाद वज़ीर अली ने अपनी हिफ़ाज़त कैसे की?
- सवार के जाने बाद कर्नल क्यों हक्का-बक्का रह गया?

चर्चा करें

एकांकी और नाटक में क्या अंतर है?

सहायक बिन्दु

- नाटक के अनेक अंक
- एकांकी एक अंकवाला
- नाटक में जीवन का वैविध्य
- एकांकी में जीवन की किसी एक घटना
- नाटक में अनेक पात्र
- एकांकी में कम पात्र
- नाटक में लंबे कथोपकथन

लिखें .....

हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध नाटक और एकांकियों की सूची तैयार करें।

कारतूस एकांकी का मंचन करें

मंचन की गतिविधियाँ

नाटक-वाचन

यह वैयक्तिक/दलीय हो सकता है। वाचन के द्वारा पूरे नाट्यदल कथा से तादात्म्य स्थापित करता है।

मंचन पूर्व चर्चा

नाटक की पृष्ठभूमि, तकनीकी क्षेत्र, पात्र आदि में सही अवधारणा उत्पन्न करने में यह चर्चा काम आती है। इससे कथापात्र के अनुरूप अभिनेता के चयन में ठीक दिशा मिल जाती है।

मंच की अवधारणा

प्रकाश, शब्द-विन्यास, मेक-अप, मंच-निर्माण आदि मंच के अनिवार्य अंग हैं, हालांकि कक्षा-प्रस्तुति के समय स्कूल में उपलब्ध सामग्रियों से काम चला सकते हैं।

सृजनपरता

नाटक की पटकथा, मंचन के लिए एक रूपरेखा मात्र है। निदेशक तथा अभिनेता कल्पना और क्षमता के अनुरूप मंचन को सृजनात्मक बनाएँ।

शब्दार्थ

अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

आँधी - കൊടുങ്കാറ്റ്, Storm

झकोर - ഉലച്ചിൽ, gush of wind

घोंसला - കൂട്, nest

बेचारी - നിസ്സഹായായ, helpless

अंडा - മുട്ട, egg

फूटना - പൊട്ടുക, to burst

सिलिया

रेंवर - ആട്ടിൻകൂട്ടം

भंगी - തോട്ടി, തൂപ്പുകാരൻ, a sweeper, a seaveger

हमउम्र - തുല്യപ്രായമായ, of equal age

नसीहत - ഉപദേശം, advice

नज़दीक - സമീപത്ത്, closeby

गिडगिडाना - കെഞ്ചുക, കേണപേക്ഷിക്കുക, to entreat, to implore humbly and earnestly

अकल - ബുദ്ധി, Intellegence

स्पर्धा - മത്സരം, പ്രതിസ്പർദ്ധ, competition, revalry

तहसील - താലൂക്ക്, Taluk

कुढ़ना - കോപിക്കുക, to be angry

मुखौटा - പൊയ്മുഖം, കൃത്രിമമുഖം, Mask

उमस - ഉഷ്ണം, Heat

ढोंग - കപടനാട്യം, വഞ്ചന, hypocrisy, fraud

सूझबूझ - ധാരണ, ബുദ്ധി, വിവേകം, understanding, intelligence, wisdom

विज्ञापन - പരസ്യം, advertisement

शर्त - നിബന്ധന, condition

हलचल - ബഹളം, commotion

किस्मत - ഭാഗ്യം, luck

जिरह - മുറിവ്, ചോദ്യം ചെയ്യൽ, wound, cross questioning

छेड़ना - അലട്ടുക, to irritate

चोंचले - ശൃംഗാരചേഷ്ട, conquetry

झापड़ - ശക്തിയായ അടി, a violent slap

घमासान - ഭയങ്കരമായ, fierce

प्रकरण - സന്ദർഭം, context

बिफरना - പിണങ്ങുക, കോപിക്കുക, to be annoyed, to get angry

अफसोस - ദുഃഖം, ഖേദം, sorrow, regret

मुहल्ला - ഗ്രാമം, പ്രദേശം, തെരുവ്, a village, a locality, a street

कारतूस

इरादा - ഇച്ഛ, desire

रियासत - രാജ്യം, ധനം, wealth, state

नीयत - ഉദ്ദേശ്യം, aim

खदेड़ना - ഓടിക്കുക, to drive away

कारनामा - प्रशंसनीय कार्य, deed

निडर - നിർഭയനായ, fearless

गालिब - വിശിഷ്ടമായ, excellent

खेमा - പാളയം, tent

खतरनाक - അപകടകരമായ, risky

तंग आना - പരിഭ്രമിക്കുക, to be perplexed

नफरत - വെറുപ്പ്, abomination

हुकुमत - ഭരണം, dominion

उम्मीद - വിശ്വാസം, expectation

पैदाइश - ജനനം, birth

हमला करना - ആക്രമിക്കുക, to attack

गिरफ्तार - തടവിലാക്കപ്പെട്ട, arrested

मुकर्रर - നിയമിക്കപ്പെട്ട, appointed

तलब - അന്വേഷണം, search

खंजर - കഠാരി, dagger

मुमकिन - സാധ്യതയുള്ള, possible

गर्द - പൊടി, dust

मसरूफ - തിരക്കുള്ള, busy

काफिला - യാത്രക്കാരുടെ സംഘം, caravan

गुंजाइश - സൗകര്യം, accomodation

खामोश - നിശബ്ദം, silent

कारतूस - വെടിത്തിര, a cartridge

अधिगम उपलब्धियाँ

- पर्यावरण संबन्धी कविताएँ पढ़कर आशय ग्रहण करता है।
- संगोष्ठी में भाग लेकर अपना मत प्रकट करता है।
- भविष्यतकाल के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करता है।
- समकालीन कहानी पढ़कर आशय ग्रहण करता है।
- कहानी में चित्रित समकालीन समस्याओं पर चर्चा करता है और अपना मत प्रकट करता है।
- एकांकी पढ़कर उसकी विशेषताओं को समझता है।
- एकांकी और नाटक के अंतर समझता है।

इकाई चार

ताना-बाना

स्टीफ़न हॉकिंग्स

डूब

कविता

भारातीय संस्कृति का आधार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है। इसमें वर्ग-वर्ण-धर्म-जाति और भेद-भाव का कोई स्थान नहीं। मानवीय संवेदना, मानवीय मूल्य और मानवाधिकार का ही महत्व है।

ताना-बाना

उदयप्रकाश

हम है ताना हम हैं बाना
हमें चदरिया, हमीं जुलाहा, हमीं गजी, हम थाना।।

नाद हमीं, अनुवाद हमीं, निशब्द हमीं, गंभीरा
अंधकार हम, चाँद-सूरज हम, हम कान्हा हम मीरा।
हमीं अकेले, हमीं दुकेले, हम चुग्गा, हम दाना।

मंदिर-महजिद हम गुरुद्वारा, हम मठ, हम बैरागी
हमी पुजारी, हमीं देवता, हम कीर्तन, हम रागी।
आखत-रोली, आलख-भभूती, रूप घरें हम नाना।

मूल-फूल हम, रुत बादल हम, हम माटी, हम पानी।
हमीं यहूदी-शेख-बरहमन, हरिजन हम खिस्तानी।
पीर-अघोरी, सिद्ध औलिया, हमीं पेट, हम खाना।

नाम-पता, ना ठौर-ठिकाना, जात-धर्म न कोई
मुलक-खलक, राजा-परजा हम हम बोलन, हम कोई
हमही दुल्हा, हमीं बाराती, हम फूँका, हम छाना।।

विचार करें, लिखें

नीचे दिये आशयवाली पंक्तियाँ कविता से चुन लें।

- भारत में धर्म भेद नहीं

ये पंक्तियाँ पढ़ें

हम हैं ताना हम हैं बाना

हमीं अकेले, हमीं दुकेले, हम चुगा, हम दाना

हमीं पूजारी, हमीं देवता, हम कीर्तन, हम रागी

हमीं युहूदी - शेख - बरहमन, हरिजन हम खिस्तानी

- इन पंक्तियों द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं? चर्चा करें।
- कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।

आत्मविश्वास को सहारे प्रगति की ओर बढे स्टीफन हॉकिन्स

मैं अभी जीना चाहता हूँ

स्टीफन हॉकिन्स का जन्म 8 जनवरी 1942 को हुआ। फ्रेक और इसबेल हॉकिंग उनके माता-पिता है। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इसके बावजूद फ्रेक और इसाबेल दोनों ने ओक्सफोर्ड

विश्वविद्यालय से क्रमशः आयुर्विज्ञान दर्शनशास्त्र की उपाधि प्राप्त कर ली। वे दोनों द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभ होने के तुरंत बाद एक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान में मिले। इसाबेल सचिव के रूप में कार्यरत ली और फ्रेक चिकित्सा अनुसंधानकर्ता के रूप में कार्यरत थे। द्वितीय विश्व युद्ध का समय आजीविका अर्जन के लिए काफ़ी चुनौतीपूर्ण था। एक सुरक्षित जगह की तलाश में उनका परिवार ओक्सफोर्ड आ गया।

स्टीफन हॉकिन्स का स्कूली जीवन बहुत उत्कृष्ट नहीं था। वे शुरु में अपनी कक्षा में औसत से कम अंक पानेवाले छात्र थे। लेकिन गणित में बहुत दिलचस्पी थी। उन्होंने गणितीय समीकरणों की हल करने के लिए कुछ लोगों की मदद से पुराने इल्क्ट्रोनिक उपकरणों के हिंसों से कंप्युटूर बना दिया। आप गणित का अध्ययन करना चाहते थे, लेकिन यूनिवर्सिटी कॉलेज में गणित उपलब्ध नहीं थी। इसलिए उन्होंने भैतिकी अपनाई। वे एक मेधावी छात्र थे। तीन सालों में ही उन्हें प्रकृति विज्ञान में प्रथम श्रेणी की औनर्स की डिग्री मिली। गणित को प्रिय विषय माननेवाले स्टीफन हॉकिन्स में बड़े होकर अंतरीक्ष विज्ञान में एक खास रुचि जागी। 20 साल की आयु में कैंब्रिज, कोस्मोलज विषय में रिसर्च के लिए चुन लिये गये। इसी विषय में उन्होंने पी.एच.डी. की। बाद में वयून्स कॉलेज में प्रोफेशनल फेलो बने।

स्टीफन के अंदर एक महान वैज्ञानिक की शौक बचपन से ही दिखाई देने लगी। किसी भी चीज़ को निर्माण और कार्यप्रणाली की लेकर उनके अंतर तीव्र जिज्ञासा रहती थी। उनके सभी सहपाठी और टीचर उन्हें प्यार से आइंस्टाइन कहकर बुलाते थे। जब वे 21 साल के थे एक बार छुट्टियाँ मनाने के लिए अपने घर पर आये हुए थे। वे सीढ़ी से उतर रहे थे। उनको बेहोशी का एहसास हुआ। नीचे गिर पड़े। बार-बार ऐसा हुआ। पता लगा कि वे एक अनजान और कभी न ठीक होनेवाली बीमारी से ग्रस्त हैं। नाम है न्यूरॉन मोटरि डिसीस। इस बीमारी में शरीर के सारे अंग धीरे धीरे काम करना बंद कर देते हैं। अंत में श्वास नली भी बंद हो जाने से मरीज घुट-घुट के मर जाती है। डॉक्टरों ने कहा - हॉकिंग बस दो साल का मेहमान है। स्टीफन ने अपनी इच्छा शक्ति पूरी पकड बना ली और कहा - "मैं दो नहीं, बीस नहीं पूरे 50 सालों तक जिऊँगा। उस समय सबने उन्हें दिलासा देने के लिए हाँ में हाँ मिला दी थी। पर आज जानती है कि हॉकिन्स ने जो कहा वह करके दिखाया है। इस बीमारी की बीच में पी.एच.डी पूरी की। अपनी प्रेमिका जेन वाइल्ड से विवाह किया। तब वे स्टिक के सहारे चलते थे। लेकिन अपने वैज्ञानिक जीवन का सफर शुरु किया। धीरे-धीरे उनकी ख्याति पूरी दुनिया में फैलने लगी।

जेन बेल्ड का एक ही लक्ष्य था कि स्टीफन हॉकिन्स की देखभाल में अपना जीवन व्यतित करना। 1960 से ही स्टीफन हॉकिन्स की हालत खराब होना शुरु हो गयी थी। बैसाखियों के सहारे चलने की नौबत आ गयी। कुछ महीनों में उनको सारे अंग स्थिर होने लगा। रोग से पीड़ित होने के बावजूद भी वे किसी का सहारा नहीं लेता था। 1974 में उन्हें डॉक्टरों की उपाधि मिलने के बाद आपेक्षित का सिद्धान्त और पुंज सिद्धान्त पर काम करना शुरु कर दिया। इस तरह इन दोनों सिद्धान्तों को मिलाकर उन्होंने महाएकीकृत सिद्धान्त बनाया था। उनके इस

सिद्धान्त से दुनिया भर में उनका नाम हो गया और उनको एक प्रख्यात वैज्ञानिक के रूप में जाने लगा।

स्टीफन हॉकिंग रोयल सोसैटी ऑफ आर्टस के सम्मानित सभासद है। साथ ही धर्माध्यक्षीय विज्ञान अकादमी के जीवनपर्यंत सदस्य रहे। युनाइटेड सेट के सर्वोच्च पुरस्कार राष्ट्रपति का मैडल ऑफ फ्रीडम भी दिया गया। 1979 से 2009 तक वे केंब्रिड्ज विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफसर थे। उनके द्वारा लिखित किताब ए ब्रीफ हिस्टरी ऑफ टाइम उस समय की सबसे ज्यादा बिकनेवाली किताब बनी। हॉकिन्स का निधन 14 मार्च 2018 को अपना स्वदेश केंब्रिड्ज में हुआ।

सोचें, बताएँ

- स्टीफन हॉकिंग की बीमारी क्या थी?
- कैसे वे बच पाए?
- हॉकिंग के जीवन में पत्नी की भूमिका क्या थी?
- आपेक्षित सिद्धान्त और पुंज सिद्धान्त से क्या तात्पर्य है?
- स्टीफ हॉकिंग की ख्याति कैसे फैल गयी है?

विचार करें, लिखें।

- किसी एक ख्यातिप्राप्त व्यक्ति की जीवनी तैयार करें।
- "जो मन की शक्ति के बादशाह होते हैं उनके चरणों पर संसार नतमस्तक होता है।" जीवनी से प्रेरणा पाकर आप डायरी लिखते हैं। वह डायरी प्रस्तुत करें।
- स्टीफन हॉकिंग का जीवन वृत्त तैयार करें।
- "खतरा हमारी छिपी हुई हिम्मत की कुंजी है। खतरे में हम भय की सीमाओं से आगे बढ़ जाते हैं।"

इस विषय पर संगोष्ठी आयोजित करें।

भाषा की बात

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।

बहुत पुरानी बात है। दादी की दादी से भी बहुत पहले की। सफेद बादलों के देश में एक बार खूब बारिश हुई।

पुराना काम	वर्षा हुई
पुरानी पुस्तक	बारिश हुई
पुराना ज़माना	बरसात हुई

प्रकृति पर मनुष्य की विजय को लेकर ज्यादा गर्व और खुश होने की ज़रूरत नहीं। क्योंकि हर जीत में प्रकृति हमसे अपना बदला लेती है। हम कदम पर प्रकृति चेतावनी देती रहती है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सूचना तकनीक के ज़रिए मानव तेज़ी से विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। अप्रत्याशित विकास योजनाओं से प्राकृतिक आपदाएँ घटित हो रही है। पढ़ें, बाढ़ से संबन्धित एक उपन्यास का अंश।

डूब

वीरेन्द्र जैन

उपरली दाढ़ के पास वाले दो दाँतों के बीच आज एक सुपारी की टुकडी आ फँसी। माते पिछले तीन घंटे से उसे चुबलाने के सभी प्रयास कर चुके थे पर वह निकलने का नाम नहीं ले रही थई।

बत्तीस के बत्तीस दूध के दाँतों को उगते, फिर नए दाँतों को उगते और असमय गिरते हुए देखने वाली जीभ ने, जो ता-उम्र इनकी हिफाजत में जुटी रही है, आज भी जब से सुपारी फँसी, कई बार उस तरफ़ जा-जाकर सुपारी को टटोला है और अपने दम पर बाहर खींच निकालने के लिए खुद को लहू-लुहान कर लिया।

मगर इन अहसान फरामोश दाँतों ने उसके सद्प्रयसों के चलते जब ज़रा तकलीफ़ महसूस की, उसे अपने बीच चबा जाने की कुचेष्टा की है।

अब इतनी देर से माते बारा-बार उस हिस्से पर अँगुली ले जा रहे हैं पर सुपारी पकड़ में नहीं आ रही।

बुरा हो साव के लड़के का जो उसने आज सवेरे ही 'नेलकटर' दिखाने के चाव में उनके नाखून भी काट दिए।

नाखून न होने से अँगुलियों का भेद खुल गया। वे स्वभाव से मुलायम हैं। नाखूनों के रहने पर ही सख्त हो पाती हैं।

क्या करें? माते यही नहीं सोच पा रहे हैं।

हारकर वे निढाल हो आए । मुँह से निकला, "सब करमन को फेर है, करम बड़े बलवान मोरे भाई, बड़े बलवान!"

पिछले दो-एक साल से कई बातों पर माते यही बोल आम तौर पर कहने लगे हैं। यही बोल वह अकेले में भी घोकते रहते हैं । कई बार लगता है, हालात के आगे पलायन कर गए माते के मुँह से अपनी लाचारी फूट रही है और कभी लगता है, वे यों ही आदतन कह दिए गए हैं ।

इस समय कहे गए बोल आदतन हैं या हालातजन्य, कह पाना कठिन है। यह सुपारी जो दाँतों के बीच आ फँसी है, यह इस बात को नहीं मानने देती कि माते हालात के आगे लाचार हो चुके हैं।

सुबह-सवेरे ही घूमा ने उनकी बाखर में आकर सूचना दी थी, "माते, आपको मालूम है क्या? रघु साव गाँव से डेरा उठा रहे हैं!"

सुनकर माते भीतर तक हिल हुए थे– 'नहीं रे, यह कैसे हो सकता है! अब अपना राज आया तो जे भग चले!'

यह भी उन्होंने घूम से नहीं कहा था । वे तो खुद से ही बातें कर रहे थे। फिर घूमा की तरफ़ देखने लगे, जैसे घूमा अभी आकर खड़ा ही हुआ हो और कुछ कहना चाहता हो।

घूमा बोला, "माते, हम झूठ थोडेई बोल रहे हैं। हम अपनी आँखों से देखकर आए हैं, साव घर का सब सामान पुट्इयों में बँधवा रहे थे।"

"हम ऐसा नहीं होने देंगे । चल रे तू मोरे साथ, चल । मैं साव को मना करता हूँ, समझाता हूँ चल के..." और बिना घूमा की कोई बात सुनने का अवसर लिये माते ओसारे में चले गए। खाट

पर से अपनी कट्टी उठाकर कंधे पर डाली और तेजी से बाहर चल दिए। उनके चलते ही घूमा भी पीछे-पीछे चलने लगा।

बाखर के बाहर पहुँचकर माते ने मुड़कर देखा। घूमा को अपने पीछे आता हुआ देखकर बोले, "जा रे, तू जाकर बड़े साव, सरपंच, मुखिया, मास्माव, बड़े ठाकुर और बामन महाराज को खबर कर दे।"

घूमा तेजी से मुड़ा । जैसे फौज का जवान फौरन हुक्म बजाने को तैयार रहता है। दो-चार

तेज कदम चलने पर उसके चेहरे पर असंतोष झलक आया । माते से कुछ दूर पहुँचकर घूमा को लगा, पौरों में चमड़े की जूतियों के रहते वह दौड़ नहीं पाएगा। उसने जूतियाँ हाथ में लीं और फिर तेजी से धूले उड़ाता हुआ घटिया उतरने लगा।

घूमा ने आज कट्टी भी पहनी हुई थई। सिर्फ़ अंगोछे में होता तो शायद औऱ तेज दौड़ लेता । अब रह-रहकर उसे कट्टी के मैले हो जाने का खयाल आ रहा था।

कल रात को रघु साव ने घूमा से कहा था कि वे कहीं बाहर जा रहे हैं इसलिए उसे बैलगाड़ी लेकर राजघाट तक चलना होगा। वहाँ से मोटर में बैठकर साव तो लतपुर और वहाँ से कहीं भी चले जाते । सो घूमा ने यह सोचकर कट्टी और पनैयाँ (जूतियाँ) पहन ली थईं कि वापसी में चंदैई तक होता आउँगा। हो सकता है, वहाँ कोई साव मिल जाएँ । तब उन्हें या उनके सामान को गाँव तक पहुँचने के बदले में दो पैसे बन जाएँ।

पर सुबह जो रघु साव के घर पहुँचने पर यह देखा कि वे तो मय पूरे कुनबे के जाने की तैयारी में जुटे हैं, सो वह दौड़ा - दौड़ा यह खबर लेकर जा पहुँचा था माते के पास ।

मुखिया और बड़े साव की बाखर आमने-सामने हैं। बीच रास्ते पर रुककर घूमा ने आवाज़ दी, "मुखिया, ओ मुखिया! साव, ओ बड़े साव ! तुम्हें रघु साव के चौंतरा पर माते ने बुलाया है।"

अपना समाचार देकर, बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए, धूल में सना घूमा तेजी से आगे दौड़ गया। सरपंच के घर, ठाकुर जी की हवेली पर, बामन महाराज के घर और मास्साव के घर, सभी के घरों के बाहर वही वाक्य दोहराकर घूमा क्षण-भर को सुस्ताने के लिए थमा। फिर दूने उतावलेपन के साथ उलटी दौड़ लगाई, रघु साव के चौंतरा पर जा पहुँचने के लिए।

तीन तरफ़ से पहाड़ों से घिरे और एक तरफ़ से नदी से छिके इस लडैई गाँव के अभी यही भी बहुत कम लोगों को मालूम है कि वे राजमाता से नहीं, अंग्रेजों से स्वतंत्र हुए हैं।

बहुत से लोग बस यहाँ तक जानते हैं कि सन् १८५७ में उनके पूर्वजों ने झाँसी की रानी की भरपूर की थी। जब रानी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुई, उसके बाद पूरी रियासत में लूटपाट मची थी—रानी के जितने भी हितू थे, उन्हें इस गुस्ताखी का तबक सिखाने के लिए । सो इनके पूर्वज उस रियासत से भाग खड़े हुए थे और जंगल-जंगल भटकते हुए चंदैई महाराज की सीमा में आ बसे थे ।

फिर कुछ ही समय बाद चंदैई पर भी लश्कर के राज का शासन हो गया थआ। तब से वे उसी राज के अधीन थे। और अब वे आज़ाद हो गए हैं।

आज़ादी की खुशी सबको हुई थी।

क्यों? –यह कोई नहीं बता सकता।

इस गाँव में दो-तीन मुसलमान भी घटिया--ऊपर रहते थे। उन्हीं के बीचों-बीच रघु साव का मकान है।

आज़ादी की लहर में जब यह सुना कि मुसलमानों के रहते आज़ादी का कोई अर्थ नहीं, तब उन्हें भी मार डाला गया।

मरते-मरते मुसलमान भी अपने निकटतम पड़ोसी रघु साव का बंटाढार कर गए।

गाँव में मारे गए सभी मुसलमानों के शव

पूरे धार्मिक अनुष्ठान और रीति–नीति के साथ दूर जंगल में गडेढ़ खोदकर गाड़ दिए गए और उन पर बड़े-बड़े पत्थर रख दिए गए, जो आज मुसलमानी पथरा' के नाम से जाने जाते हैं।

इस तरह पूरी आज़ादी मिल जाने का बिगुल बजा दिया गया।

वीरेन्द्र जैन

जन्म	:	1955 सितंबर 5
उपन्यास	:	सुरेखा-पर्व, डूब, सबसे बड़ा सिपाहिया, पंचनामा, पार।
कहानी संग्रह	:	बायीं हथेली का दर्द, मैं वहीं हूँ, बीच के बारह बरस।
पुरस्कार	:	साहित्य कृति पुरस्कार, मध्य प्रदेश साहित्य परिषद पुरस्कार।

सोचें ..... समझें..... लिखें।

- 'डूब' उपन्यास में चित्रित बाढ़ का कारण क्या है?
- बाँध योजनाओं के हानि-लाभ पर चर्चा करें।
- बाँध के निर्माण के दौरान कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है?
- केरल में आए बाढ़ का कृषि के क्षेत्र में क्या असर हुआ?
- 'बाढ़ जैसे प्राकृतिक आपदाएँ प्रकृति के असंतुलन से ही पैदा होती है।' केरल में आए बाढ़ के आधार पर चर्चा करके टिप्पणी लिखें।

भाषा की बात

ध्यान दें।

मैं	मेरा	मेरी	मेरे
तू	तेरा	तेरी	तेरे
आप	आपका	आपकी	आपके
तुम	तुम्हारा	तुम्हारी	तुम्हारे
वह	उसका	उसकी	उसके
यह	इसका	इसकी	इसके
वे	उनका	उनकी	उनके
ये	इनका	इनकी	इनके

- इस तालिका के आधार पर सर्वनाम और प्रत्ययों के योग पर चर्चा करें।

शब्दार्थ

तानाबाना

चदरिया - പുതപ്പ്, sheet

कान्हा - കൃഷ്ണൻ

दुकेला - ഇരട്ടയായിട്ട്, men together

दाना - ധാന്യം, grain

चुग्गा - ധാന്യം, grain

बैरागी - സന്യാസി, recluse

आखत - നിവേദ്യത്തിനുപയോഗിക്കുന്ന പൊടിയാത്ത അരി, unbroken rice used in oblation

भभूति - ഭസ്മം

रुत - ഋതു, season

ठौर ठिकाना - സ്ഥലം, occasion

दुल्हा - വരൻ, bridegroom

छाना - അഭയം നൽകുക, to be brought under a shelter.

जीवनी

औसत - ശരാശരി, average

दिलचस्पी - താത്പര്യം, interesting

भौतिकी - ഊർജ്ജതന്ത്രം, Physics

अंतरीक्ष विज्ञान - അന്തരീക്ഷ സ്ഥിതികളെ കുറിച്ചുള്ള ശാസ്ത്രം, Meteorology

शौक - അഭിരുചി, inclination

मरीज - രോഗി, patient

दिलासा - സാന്ത്വനം, consolation

सफर - യാത്ര, travel

खराब - മോശം, bad

बैसाखी - ഊന്നുവടി, crutch

डूब

सुपारी	-	അടയ്ക്ക, betelnut	मुलायम	-	മൃദുവായ, soft
चुबलाना	-	രുചിക്കുക, to revolve something in the mouth	लाचार	-	നിസ്സഹായനായ, helpless
			ओसारा	-	മുറ്റം, Porch
हिफाजत	-	രക്ഷ, safety	चमड़ा	-	തുകൽ, Leather
टटोलना	-	തൊട്ടുനോക്കുക, to touch	अंगोछा	-	ടൗവൽ, Towel
लहू लुहान	-	രക്തത്തിൽ കുളിച്ച, bathed in blood	हवेली	-	മാളിക, Palatial building
			सुस्ताना	-	വിശ്രമിക്കുക, to take rest
फरामोश	-	മുറിവുള്ള, forgetful	उतावला	-	വേഗത്തിൽ, speed
अहसान	-	ദയവ്, kindness	गुस्ताखी	-	വിനയമില്ലാത്ത, arrogance
तकलीफ	-	കഷ്ടപ്പാട്, difficulty	बिगुल	-	ബ്യൂഗിൾ, Bugle
नाखून	-	നഖം, nail			

अधिगम उपलब्धियाँ

- समकालीन कविता पढ़कर आशय ग्रहण करता है।
- समकालीन सामाजिक सच्चाई से कविता का आशय जोड़ने की क्षमता प्राप्त करता है।
- कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार करता है।
- जीवनी पढ़कर आशय ग्रहण करता है।
- जीवनी से आत्मकथांश तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- डायरी तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- आधुनिक साहित्यिक विधाओं में उपन्यास का महत्व समझता है।
- उपन्यास अंश पढ़कर आशय ग्रहण करता है।

- उपन्यास पढ़कर सार तैयार करता है।
- उपन्यास में चित्रित समस्याओं पर चर्चा करता है और अपना मत प्रकट करता है।
- सर्वनाम और प्रत्यय के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करता है।
- प्राकृतिक आपदाओं की सही जानकारी प्राप्त करता है।

अतिरिक्त वाचन सामग्री

कविता

मुट्ठी भर चावल

ओमप्रकाश वाल्मीकि

अरे, मेरे प्रताडित पुरखों
तुम्हारी स्मृतियाँ
इस बंजर धरती के सीने पर
अभी ज़िन्दा हैं
अपने हरेपन के साथ

तुम्हारी पीठ पर
चोट के नीले गहरे निशान
तुम्हारे साहस और धैर्य को
भुला नहीं पाये हैं अभी तक

सख्त हाथों पर पड़ी खरोंचे
रिसते लहू के साथ
विरासत में दे गयी हैं
ढेर-सी यातनाएँ
जो उगानी हैं मुझे इस धरती पर
हरे, नीले, लाल फूलों में

बस्तियों से खदेडे गये
ओ, मेरे पुरखो
तु चुप रहे उन रातों में
जब तुम्हें प्रेम करना था
आलिंगन में बाँधकर
अपनी पत्नियों को
तुम तलाशते रहे
मुट्ठी भर चावल
सपने गिरवी रखकर

ओ, मेरे अज्ञात, अनाम पुरखो
तुम्हारे मूक शब्द जल रहे हैं
दहकती राख की तरह
राख जो लगातार कॉप रही है
रोष में भरी हुई
मैं जानना चाहता हूँ
तुम्हारी गन्ध.....
तुम्हारे शब्द.....
तुम्हारा भय .....
जो तमाम हवाओं के बीच भी
जल रहे हैं
दिये की तरह युगों-युगों से!

नाम	:	ओमप्रकाश वाल्मीकि
जन्म	:	30 जून 1950 उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में
कविता संग्रह	:	सदियों का संताप, बस बहुत हो चुका, अब और नहीं, शब्द झूठ नहीं बोलते।
कहानी संग्रह	:	सलाम, घुसपैठिए
आत्मकथा	:	जूठन
सम्मान	:	सन् 1993 में डॉ.अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार, सन् 1995 में परिवेश सम्मान, न्यू इंडिया बुक पुरस्कार 2004, कथाक्रम सम्मान 2001।

महाश्वेता देवी

महाश्वेता देवी बंगला साहित्यकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता है। महाश्वेता देवी का जन्म 14 जनवरी 1926 को ईस्ट बंगाल के ढाका शहर में हुआ था। इन्हें 1996 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

महाश्वेता देवी से विनय उपाध्याय का साक्षात्कार

अपने जीवन में आपने एक बड़ा सपना बुना। उस सपने को असलियत में बदला। आज आपको सारा देश आदर्श के रूप में देखता है। उन बुनियादी परिवेश को जानने की इच्छा होती है, जहाँ आपके भीतर एक अनूठा स्वप्न-बीज अंखुआया।

आज सबको बड़ा सपना लगता है, वैसी कल्पना उस समय तो मैंने की ही नहीं थी। जब मैंने चलना शुरू किया था। भविष्य को भला किसने जाना है? लेकिन यह तो सच है कि बचपन में मिला परिवेश और संस्कार बड़े ही महत्व के होते हैं। हमारे पूरे जीवन तथा कर्म में उनकी छाप दिखाई देती है। ढाका में मेरा जन्म हुआ। मेरे पिता मनीष घटक उस समय के जाने-माने कवि साहित्यकार थे और माँ की भी साहित्य में गहरी रुचि थी। वे समाजसेवा में भी लगी रहती थी। ढाका के इंडेन माटेसरी स्कूल में मुझे भर्ती कराया गया। चार साल की उम्र में ही मैंने बगला लिखना-पढ़ना सीख लिया था। पिता की नौकरी के कारण उनका यहाँ-वहाँ तबादला होता रहा, इस कारण ढाका के जिदावहार लेन स्थित अपने ननिहाल में बचपन में मैं काफ़ी रही। शांति निकेतन में भी मेरा दाखिला कराया गया और वहाँ मैंने महिला आत्मरक्षा समिति के नेतृत्व में राहत तथा सेवा कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। मैं बताना चाहूँगी कि मेरे नाना गरीब वकील थे। वे नानी के साथ मिलकर एक स्कूल चलते थे। मेरी मौसी भी इस काम में हाथ बटाती थी। नानी के घर का वातावरण बड़ी ही बौद्धिक था। वहाँ खूब किताबें थी। तरह-तरह की। नानी मुझे अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाती थी। इस सबके साथ मैं आपको बताऊँ कि ये वौ दौर था, जब समाजसेवा के संस्कार निस्वार्थ भाव से अंतःकरण में होते थे। पड़ोसी की तकलीफ़ देखकर पड़ोसी सहायता के लिए उठ खडा होता था। बड़ी ही जागृति थी समाजसेवा की। मेरे मन पर इस सबका प्रभाव उस समय काफ़ी गहरा पड़ा।

क्या परिवार के दायित्वों से आप बिल्कुल मुक्त रही?

समाजसेवा के कार्यों के लिए अमूमन आज़ादी अपेक्षित रहती है, या न चाहकर भी मुक्त होना पढ़ता है?

बिल्कुल नहीं। बड़ी ही विचित्र स्थितियों का सामना करते परिवार आगे बढ़ा और मैंने अपनी जगह बनाई। मैं शांति निकेतन में जब पढ़ रही थी, तब परिस्थितिवश बीच में ही मुझे 1939 में कलकत्ता बुला लिया गया। मैं तब खूब रोई थी। तब छोटे पाँच भाई बहन थे। माँ गर्भवती थी और उसी अवस्था में सीढ़ी से फिसलकर गिर पड़ी थी। बिस्तर पर पड़ी माँ का जीवन खतरे में था। मेरी उम्र तब तेरह साल की थी। मुझे इसी

उम्र में बड़ा होना पड़ा। माँ की सेवा तो करनी ही थी, भाई-बहनों को भी संभालना, उनकी पढ़ाई-लिखाई में मदद करना यह सब मेरे ज़िम्मे थे। माँ के जीवन के अंतिम वर्षों में मैंने पुरानी सिलाई मशीन चलाकर कपड़े भी सिले।

यह सिलसिला कब तक चलता रहा?

करीब पाँच साल और 1944 में जब मैंने कलकत्ता के अशुतोष कॉलेज से इन्टरमीडिएट किया, दायित्वों से थोड़ी मुक्ति मिली। छोटी बहन मितुल ने मेरा हाथ बटाना शुरु किया। मैं फिर शांति निकेतन चली गई।

क्या इसी दौरान लिखना शुरू कर दिया?

शांति निकेतन का गरिमामय परिवेश, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की साक्षात् उपस्थिति सब कुछ कितना प्रेरणादायी था। शांतिनिकेतन में देश के संपादक सागरमय घोष आते थे। उनसे हुई भेंट बड़ी ही रचनात्मक साबित हुई। उन्होंने मुझे इस पत्र में लिखने को कहा। तब तीन कहानियाँ उसमें छपी और हर कहानी पर दस रुपए का पारिश्रमिक मिला। मैं उस समय थर्ड इयर में थी। तभी मन में आया कि लिख-पढ़कर भी गुज़ारा संभव है।

झांसी की रानी पर आपकी पहली किताब आयी। किसी घटना या संयोग के कारण आपने झांसी की रानी का विषय चुना या महिला होने के कारण संवेदनाएँ जागी? कृपया खुलासा करें।

हुआ ये कि विज़न के साथ एक हिन्दी फिल्म की कहानी लिखने के सिलसिले में मुझे मुंबई जाना पड़ा। वहाँ मेरे बड़े मामा सचिव चौधरी रहते थे। उसके घर मैंने तब वी.डी.सावरकर 1959 पढ़ी। इस पुस्तक का प्रभाव मुझ पर इतना गहरा पडा कि मैंने तय किया झाँसी की रानी पर मैं विस्तार से लिखूँगी। इस संकल्प को पूरा करने के लिए रानी से संबंधित पुस्तकें छाननी रही। मैंने झाँसी की रानी के भतीजे गोविन्द चिंतामणि से भी पत्र-व्यवहार किया। तब मेरी उम्र 26 वर्ष की थी। मैंने बड़े ही उत्साह से डूबकर करीब चार सौ पेज लिख डाले। लेकिन मन नहीं भरा। रानी का जीवन था ही इतना विराट कि उसे समेटने की ललक बढ़ती ही गई।

माली हालत तो बहुत ठीक नहीं थी। अपने शुभचिन्तकों से पैसे लिए और अपने छह वर्षीय पुत्र व पति को कलकत्ता छोड़कर झांसी निकल पड़ी। वहाँ महीनों अकेले ही पुरे बुन्देलखंड में घूमी। उन लोकगीतों को एकत्र किया, जिनमें झांसी की रानी की जीवनी लिखनेवाले वृंदावन लाल वर्मा झांसी कंटोनमेंट में रहते थे। उनसे भी मिली। इस दौरान ग्वालियर तथा कालपी की यात्राएँ भी की। 1956 में यह पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक की रचना ने मुझे दिव्य अनुभव दिये। इसके बाद नटी, आधार मानिक, अमृतसंचय, विवेक दयाल, पाला और जल व स्तनदायिनी, किताबों के लिए भी तथ्य संग्रह करने के लिए मुझे काफ़ी श्रम करना पड़ा। करीब चार साल में मैं यह किताब पूरी कर पायी।

आप उन बिरली रचनाकारों में शामिल हैं, जिन्होंने लिखने और जीने के बीच समान व्यवहार किया है। क्या आप अन्य लेखकों से इस बारे में कुछ कहना चाहेंगी?

हर दौर में लेखक के सामाजिक सरोकरा की अपेक्षा व्यापकता में बनी रहती है। लेखक को समाजसेवी होना चाहिए। लेकिन बिना अन्तप्रेरणा के कुछ भी संभव नही। अंदर सेना

की इच्छा न हो तो बाहर कैसे आ सकती है भला। यह विवेक सबके मन में उपजे, मैं तो कामना ही कर सकती हूँ। वैसे कागज़ भी कम पावरफुल माध्यम नहीं है। उस पर लिखा हुआ सशक्त है तो असर करेगा ही।

दलित-आदिवासियों से जुड़ने, उन पर लिखने के पीछे क्या कारण रहे?

छुटपन से ही समाजसेवा से जुड़ने और जन आन्दोलनों में भाग लेने के दौरान विसंगतियों के खिलाफ विद्रोह की भावना मेरे मन में घर कर गयी थी। दक्षिण भारत, पश्चिम बंगाल और उडीसा के आदिवासियों, बधुआ मज़दूर, ठेका मज़दूर, किसान, फैक्टरी के मज़दूर, ईंट भट्टा, रिक्शा चालक और गाँवों के आम लोगों के अधिकारों, उनके साथ हुए अन्यायों को लेकर सक्रय सामाजिक हस्तक्षेप के लिए मुझे सहज काम करने में सुख मिला। मैंने काल्पनिक और अकादमिक लेखन में ज़्यादा रुचि कभी नहीं ली। मैं यथार्थवादी रही हूँ जो जैसा किया देखा उसे वैसा ही लिखने में मुझे राहत मिली। 'बिरसा मुंडा' की कथा पर आधारित पुस्तक 'अरण्येर अधिकार' में आदिवासियों के सशक्त विद्रोह का स्वर है। इस पुस्तक को लिखने की वजह बने फिल्म निर्माता शांति चौधरी। उन्होंने पटकथा लिखने का आग्रह किया तो मैं दक्षिण बिहार गयी। वहाँ बहुत बड़ा सर्वेक्षण किया। तथ्य संग्रह किये। फिर लिखी यह किताब।

इस काम की आदिवासी समाज में क्या प्रतिक्रिया हुई?

बहुत रोमांचक। जब मुझे इस पुस्तक केलिए 1979 में साहित्य अकादमी अवार्ड मिला तो आदिवासियों ने ढाक बजाकर खुशी जाहिर की। उन्होंने लोगों से कहा यह पुरस्कार तो हमें मिला है। उन्होंने मेरा अभिनन्दन करने के लिए मुझे अपने गाँव मेदिनीपुर बुलाया। आदिवासियों ने माना कि उन्हें जो स्वीकृति मिली, उसका कारण मेरा लेखन है। उनके इस आत्मीय उद्गर ने मेरे भीतर उनके प्रति दायित्वबोध और भी बढ़ा दिया। मैंने अपनी कोशिश ज़ारी रखी है।

आदिवासियों के बीच रहकर आपको कैसा लगा?

मेरे जीवन में यह अनुभव तीर्थ की तरह पवित्र है। मैं उन्हें कुछ सिखाने नहीं बल्कि स्वयं सीखने गयी। गजब की सामुदायिक भावना उनके भीतर है। वे भले ही अनपढ़-अशिक्षित हो, लेकिन आज के तथाकथित आधुनिक समाज की तुलना में कही अधिक सहृदय, सभ्य, सुसंस्कृत है वे। उनके पास अपना जीवन बोध है। वे विपन्न है तो अपने अधिकारों से।

मतलब?

उनके लिए सरकार और समाज ने ठीक से काम नहीं किये। इन्हीं गरीब, पिछड़े, आदिवासियों ने हमें स्वतंत्रता दिलायी। अपनी जान गंवायी। आज ये ही लोग हाशिए पर है। उनके इलाकों में सड़कें नहीं, पानी नहीं, शिक्षा नहीं। कैसी आज़ादी आयी इनके लिए? उनके नाम का पैसा भी उनके काम के लिए कितना पहुँच पाता है, यह हम सबको मालूम है। मुझे हैरत इस बात की होती है कि जो स्वयंसेवी संगठन आदिवासियों के नाम पर बने हैं, लाखों-करोड़ों रुपये की एड लेते हैं, वे एक दिन भी इन क्षेत्रों में जाकर काम नहीं करते। मैं साफ कहूँगी कि ट्राइबल के लिए जिस गंभीरता से काम आज़ादी के बाद होना था, नहीं हुआ। सभा-

सेमिनारों की नहीं, वहाँ जाकर काम करने की ज़रूरत है।

सुना है पुरस्कारों में मिली राशि आपने आदिवासियों के हित में दान कर दी?

ये सही है। ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी, मेगसेसे के दौरान जो भी मिला मैंने सामाजिक कार्यों में उसे लगा दिया। अब मेरा जीवन इन्हीं के लिए है।

आप मूलतः बंगला लेखिका रही है, हिन्दी से आपको क्या अपेक्षा है?

ये बिल्कुल सही है कि हिन्दी राज्यों में मेरा बड़ा सम्मान हुआ है। कई लोग आकर मिलते हैं, बड़ी खुशमिजाजी से मेरे लिखे पर बात करते हैं। लेकिन अभी भी मेरी बहुत सी महत्वपूर्ण कहानियों का हिन्दी के अनुवाद नहीं हुआ है। इस काम में साहित्य में ज़रा कम ही रुचि है।

अपना काम करते हुए आपको औरत के रूप में कभी किसी विरोध का सामना करना पड़ा?

तकलीफ तो दूसरी किस्म की ज़्यादा। आयी मसलन, आर्थिक, पारिवारिक। एक समय जब पैसे की बहुत ज़रूरत थी और काम बहुत कम था। तब एक व्यक्ति ने कहा था - देखता हूँ कैसे लिखती हो? मैंने बता दिया कि लिखना छोड़ूँगी नहीं। वह मेरी पूँजी है। सबका सहयोग, विश्वास आगे बढ़ाता रहा।

विश्व ग्राम का सपना और उसके साथ बाजारवाद की अवधारणा आपको कैसी लगती है?

मैं शुरू से ही इन दोनों के खिलाफ रही हूँ। एक दिन हमारी पूरी संस्कृति को नष्ट कर देगा यह भूमण्डलीकरण और बाज़ार। सब कुछ बाज़ार में बदलता जा रहा है। हमारी अपनी मौलिकता की रक्षा तो करनी पड़ेगी। पहले हम अपने देश को तो समझ लें।

जीवनी

सुभाष पालेकर

सुभाष पालेकर एक भारतीय कृषक एवं कृषि विशेषज्ञ हैं। उन्होंने 'शून्य बजट आध्यात्मिक कृषि' का आविष्कार किया है, जिसमें कृषि करने के लिए न ही किसी भी रसायनिक कीटनाशक का उपयोग किया जाता है और न ही बाज़ार से अन्य औषधियाँ खरीदने की आवश्यकता पड़ती है।

सुभाष पालेकर का जन्म वर्ष 1949 में भारत में महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में बेलोरा नाम के एक छोटे से गाँव में हुआ। उन्होंने नागपुर से कृषि विषय में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। महाविद्यालय जीवन के दौरान, जब वह आदिवासी क्षेत्रों में काम कर रहे थे, तब उन्होंने अपनी जीवन शैली और सामाजिक संरचना का अध्ययन किया। उन्होंने जंगलों में प्रकृति प्रणाली का अध्ययन किया। जंगल में किसी भी मानवीय हस्तक्षेप और सहायता को न देख कर वह हैरान रह गए। वहाँ हर साल आम, बेर, इमली, जामुन, शरीफा, नीम, मोह के बड़े पेड़ों को बहुत फल आते थे। तब वह उन्होंने जंगल के वृक्षों के प्राकृतिक

विकास पर अनुसन्धान शुरू किया। वर्ष 1986-1988 के दौरान उन्होंने जंगली वनस्पतियों का भी अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि जंगलों में एक स्व-विकसित, स्वयं पोषित और पूरी तरह से आत्मनिर्भर प्राकृतिक व्यवस्था विद्यमान है। वहाँ एक पारिवारिक तंत्र है, जिस पर वनस्पतियों का विकास होता है। उन्होंने प्राकृतिक व्यवस्था का अध्ययन किया और वर्ष 1989 से 1995 के दौरान जंगल की उन प्राकृतिक प्रक्रियाओं का अपने खेत पर परीक्षण कर देखा। इन छः वर्षों शोध कार्य के दौरान उन्होंने 154 अनुसंधान परियोजनाएँ पूर्ण की। इसके बाद उन्हें, शून्य बजट प्राकृतिक (आध्यात्मिक) कृषि की तकनीक आरंभ की, जिसका प्रचार उन्होंने कार्यशालाओं, सेमिनार के माध्यम से किया और इस विषय पर मराठी, हिन्दी, अंग्रेज़ी, कन्नड, तेलुगु, तमिल भाषाओं में अपनी पुस्तकें लिखी और भारत भर में किसानों के द्वारा स्थापित कृषि के हज़ारों मॉडल विकसित किये।

वर्ष 1996-98 से उन्हें पुणे, महाराष्ट्र से एक प्रसिद्ध होने वाले 'बलीराजा' मराठी कृषि पत्रिका की संपादकीय टीम में शामिल किया गया, लेकिन आन्दोलन की गति को बढ़ाने के लिए, वर्ष 1998 में उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने कृषि के बारे में मराठी में 20, अंग्रेज़ी में 4 और हिन्दी में 3 पुस्तकें लिखी। मराठी में लिखी गई पुस्तकों का सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है। उनके आन्दोलन में मीडिया के ज़रिए राजनेता, किसानों का ग्रामीण अर्थव्यवस्था की वास्तविक समस्याओं के प्रति ध्यान आकर्षित किया। वे मानते हैं, अब शून्य बजट प्राकृतिक कृषि के अलावा किसानों की आत्महत्या को रोकने का और कोई विकल्प नहीं है। उनका यह भी विश्वास है कि इंसान को जहरमुक्त भोजन उपलब्ध करने का एक ही तरीका है, शून्य बजट प्राकृतिक कृषि।

भारत के महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलुंगाना, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल, पंजाब आदि अनेक राज्यों में किसान शून्य बजट प्राकृतिक कृषि कर रहे हैं। कर्नाटक राज्य ने उन्हें वर्ष 2005 में, एक क्रांतिकारी संत बसवराज के नाम पर दिया जानेवाला पुरस्कार श्री मृग राजेन्द्र मठ, चित्रदुर्ग द्वारा 'बसवश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया था, जिसमें। लाख रुपये व प्रशस्ति दिया गया। इसके पहले यह पुरस्कार दलाई लामा, अन्ना हज़ारे, वंदना शिवा, मेधा पाटकर आदि को दिया गया था। वर्ष 2006 में कर्नाटक राज्य रजत संघ, कर्नाटक ने किसान संघ भारत कौशल रत्न पुरस्कार से भी उन्हें सम्मानित किया। वर्ष 2007 में उन्हें श्री रामचन्द्रपुरमठ, शिमोगा कर्नाटक द्वारा भारतीय पशु संवर्धन केलिए 'गोपाल गौरव पुरस्कार' भी प्रदान किया गया था।

शून्य लागत खेती पर एक नज़र

- मुख्य फसल का लगत मूल्य, साथ में उत्पादित सह फसलों को विक्रय मूल्य से निकाल कर लगत को शून्य करना तथा मुख्य फसल को बोनस के रूप में लेना।
- खेती के लिए कोई भी संसाधन (खाद, बीज, कीटनाशक आदि) बाज़ार से न लाकर इसका निर्माण घर पर ही करने से लगत शून्य हो जाती और गाँव का पैसा गाँव में रहता है।

शून्य लागत खेती के चरण

1. बीजामृत (बीजशोधन) : 5 किलो देशी गाय का गोबर, 5 लीटर गोमूत्र, 50 ग्राम चूना, एक मुट्ठी पीपल के नीचे अथवा मेड की मिट्टी, 20 लीटर पानी में मिलाकर चौबीस घंटे रखे। दिन में दो बार लकड़ी से हिलाकर बीजामृत तैयार किया जाता। 100 किलो बीज का उपचार उसके बुवाई की जाती है। इससे डिएपी, एनपीके समेत सूक्ष्म पोषक तत्वों की पूर्ति होती है और कीटरोग की संभावना नगण्य हो जाती है।
2. जीवामृत : इसे सूक्ष्म जीवाणुओं का महासागर कहा गया है। 5 से 10 लीटर गोमूत्र, 10 किलो देशी गाय का गोबर, 1 से दो किलो गुड, 1 से दो किलो दलहन आटा, एक मुट्ठी जीवाणुयुक्त मिट्टी, 200 लीटर पानी। सभी को एक में मिलाकर ड्रम में जूट की बोरी से ढके। दो दिन बाद जीवामृत को टपक सिंचाई के साथ प्रयोग करे। जीवामृत का स्प्रे भी किया जा सकता है।
3. घन जीवनामृत : 100 किलो गोबर, एक किलो गुड़, एक किलो दलहन आटा, 100 ग्राम जीवाणुयुक्त मिट्टी को पांच लीटर गोमूत्र में मिलाकर पेस्ट बनाए। दो दिन छाया में सुखाकर बारीक करके बोरी में भर ले। एक एकड़ में एक कुंतल की दर से बुवाई करें। इससे पैदावर दो गुनी तक बढ़ जाएगी।

कविता

नदी के द्वीप

अज्ञेय

हम नदी के द्वीप है।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाए।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अन्तरीय उभार संकेत, कूल,
सब गोलाईयाँ उसकी गदी हैं।
माँ है वह। है, इसी से हम बने हैं।
किन्तु हम है द्वीप।
हम धारा नहीं है।
किन्तु हम हैं द्वीप।
हम धारा नहीं है।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप है स्रोतस्विनी के
किन्तु हम बहते नहीं है। क्योंकि बहना रेत होना है
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।

द्वीप है हम
यह नहीं है शाप। यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र है। बैठे नदी के क्रोड में।
वह बृहद् भूखंड से हमको मिलाती है।
और यह भूखंड अपना पितर हैं।

लेख

पत्रकारिता

आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाह है पत्रकारिता। जिसमें समाचारों का एकत्रीकरण लिखना, जानकारी एकत्रित करके पहुँचना, संपादित करना और सम्यक प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित हैं। आज के युग में पत्रकारिता के अनेक माध्यम हो गये हैं, जैसे अखबार पत्रिकायें, रेडियो, दूरदर्शन, वेब पत्रकारिता आदि। बदलते वक्त के साथ बाज़ारवाद और पत्रकारिता के अंतर्संबन्धों ने पत्रकारिता की विषय वस्तु तथा प्रस्तुति शैली में व्यापक विषय वस्तु तथा प्रस्तुति शैली में व्यापक परिवर्तन किए।

पत्रकारिता का इतिहास प्रौद्योगिकी और प्यापार के विकास के साथ आरंभ हुआ। सामाजिक सरोकारों तथा सार्वजनिक हित से जुड़कर ही पत्रकारिता सार्थक बनती है।

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा पाया (स्तंभ) भी कहा जाता है। कोई भी लोकतंत्र तभी सशक्त है जब पत्रकारिता का उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच महत्वपूर्ण कडी की भूमिका अपनाये।

इंटरनेट और सूचना के अधिकार ने आज की पत्रकारिता को बहुआयामी और अनन्त बना दिया। मीडिया आज काफी सशक्त, स्वतंत्र और प्रभावकारी हो गया है। आर्थिक उदारीकरण ने पत्रकारिता के चेहरे को पूरी तरह बदलकर रख दिया है। विज्ञापनों से होनेवाली अथाह कमाई ने पत्रकारिता को काफी हद तक व्यावसायिक बना दिया है।

पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार - खोजी पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, महिला पत्रकारिता, बाल पत्रकारिता, आर्थिक पत्रकारिता आदि। पहले देश-विदेश में अंग्रेज़ी पत्रकारिता का दबदबा था, लेकिन आज हिन्दी भाषा का झण्डा चहुंदिशा लहरा रहा है। 30 मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। आधुनिक साहित्य के अनेक अंगों की भाँति हिन्दी पत्रकारिता भी नई कोटि की है और उसमें भी मुख्यतः हमारे मध्यवित्त वर्ग की सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और राजनीतिक हलचलों का प्रतिबिंब भास्वर है।

हिन्दी की समाचार पत्रकारिता का शुभारंभ 19वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में माना जाता है। जब आज के कोलकत्ता और तब के कलकत्ता नगर से 'उदंत मार्तण्ड' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला गया था। हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रेमचन्द, निराला बनारसीदास चतुर्वेदी, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, शिवपूजन सहाय आदि की उपस्थिति जागरण, हंस, माधुरी, अभ्युदय मतवाला, विशाल भारत आदि के रूप में दर्ज है।

डूब

वीरेन्द्र जैन

वीरेन्द्र जैन का प्रसिद्ध उपन्यास है 'डूब' । उपन्यास के केन्द्र में मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की सीमाओं में स्थित लडैई गाँव है। उनके पूर्वज रानी लक्ष्मीबाई के विश्वस्त थे। सन् 1857 के लड़ाई में उन्होंने रानी की भरपूर मदद की थी। रानी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुई तो उसके बाद पूरे गाँव में लूटपाट मची । इससे बचने केलिए लोग जंगल -जंगल भटकते हुए लडैई में आ बसे । लडाई से बेहाल हुए लोग द्वारा बसाए गए डेरा होने के कारण गाँव का नाम बन गया 'लडैई'।

तीन तरफ़ से पहाडों से घिरे एक तरफ बेतवा नदी से समृद्ध इस लडैई गाँव के बहुत कम लोग ही यह जानते हैं कि अब वे राजमाता से नहीं, अंग्रेज़ों से स्वतंत्र हुए हैं। आजादी के बाद सरकार द्वारा पंचायती चुनाव की घोषण होती है। गाँव में माते, ठाकुर और मोती साव द्वारा चुनाव की तैयारियाँ करते थए। इस बीच राजमाता द्वारा पाजघाट बाँध परियोजना की घोषणा आती है। लोगों को जीवन के प्रति कएक नई आशा जागी । उनका विचार है कि योजना से गाँवालों को रोज़गार मिलेगा।
बिजली आएगा, पूरे गाँव में विकास होगा । रोज़गार तो दूर की बात, उन्हें वहाँ से पलायन करना पड़ा । बाहर के लोगं को नौकरी दी गई ।

बाँध योजना से गाँव के शान्त वातावरण सब नष्ट हो गया। लोगों की ज़मीन, मकान, कुएँ, पेड़ सब सरकार द्वारा अधिग्रहीत किए गये । बाँध के निर्माण के लिए ली गई ज़मीन अधिकतर खेती की थी। गाँव बेकारी और गरीबी का शिकार बना । गाँव और खेती पर आश्रित कुटीर उद्योग भी अन्तिम साँस लेने लगा। गाँव की पूरी आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगे ।

बाधों के निर्माण से नदी का स्वतंत्र प्रवाह नष्ट हो जाता है। प्रवाह रुककर शुष्क हो जाने पर भू-गर्भ जल का प्रतिशत भी कम हो जाता है। इस प्रकार बेतवा नदी के अनुग्रह से चल रही खेती सब नष्ट बन गयी। सैंकडों एकड ज़मीन ऊजड हो जाने के साथ-साथ सैकड़ों लोगों की आमदनी भी नष्ट बन गयी। बेतवा नदी के किनारे रहनेवाले लोगों का अपना सब कुछ नष्ट होने वाला है।

उपन्यास में दिखाया गया है कि परियोजना के ऐलान के बाद वर्षों बीत जाने पर भी जनता के विकास केलिए कोई कार्य नहीं हुआ है । ज़मीन नष्ट हुए लोगों को ज़मीन या उचित मुआवज़ा नहीं मिला । विस्थापित जनता अनाथ बन गये। सालों से बसते गाँव और घर को छोड़कर बेकार की ज़िन्दगी जीने की स्थिति भयानक है। इसी के साथ साहूकारों एवं ठेकेदारों के लूट भी खूब चलते थए। जब गाँव वालों को मुआवज़ा मिलता था तब साहूकारों ने कर्ज के नाम पर उसे वसूल कर लेता था।

प्रकृति का एक स्वाभाविक संतुलन है। किन्हीं वजह से अगर वह संतुलन बिगड़ जाए तो सर्वनाश निश्चय है। बाँधों के निर्माण से प्रवाह

रुकने के कारण उसका संतुलन नष्ट हो जाता है। 'डूब' उपन्यास में लडैई का भी यही स्थिति हुई है। निर्माणाधीन राजघाट बाँध के तटबंधों में से एक तटबंध में दरार पड जाने से तटबंध के एक छोटा सा भाग टूट गया और बाँध पर रोका गया पानी बहकर आसपास के गाँव सब डूब गये । लगभग पूरा गाँव पंचमनगर के किले के बाहर खडे पुराने वट-वृक्ष के नीचे अपना-अपना सामान संभालकर पानी के उतरने की राह जोह रहा हुथा। पंचमनगर और लडैई के कुछ युवक पानी में फँसे मवेशियों को और सामान को पानी से निकाल-निकालकर किले से बाहर कर रहे थे। ऊँचाई पर बने इस किले के सिवाय पूरा गाँव जलमग्न था । 'डूब' उपन्यास यह संकेत करता है कि विकास योजनाओं का होना चाहिए । नहीं तो ऐसे योजनाएँ मुनाफे से अधिक कालांतर में हानी पहुएचाएगा।

कहानी

अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी

सुधा अरोड़ा

प्यारी माँ और बाबा,

चरण-स्पर्श

मुझे मालूम है बाबा, लिफाफे पर मेरी हस्तलिपि देखकर लिफाफे को खोलते हुए तुम्हारे हाथ काँप गये होंगे। तुम बहुत एहतियात के साथ लिफाफा खोलोगे कि भीतर रखा हुआ मेरा खत फट न जाया।

सोचते होगे कि एक साल बाद आखिर मैं तुम लोगों को खत क्यों लिखने बैठी। कभी तुम अपने डाकघर से, कभी बाबला या बउदी अपने ऑफिस से फोन कर ही लेते हैं फिर खत लिखने की क्या ज़रूरत! नहीं, डरो मत, ऐसा कुछ भी नया घटित नहीं हुआ है। कुछ नया हो भी क्या सकता है।

बस, हुआ इतना कि पिछले एक सप्ताह से मैं अपने को बार-बार तुम लोगों को खत लिखने से रोकती रही । क्यों ? बताती हूँ। तुम्हें पता है न, बम्बई में बरसात का मौसम शुरू हो गया है। मैं तो मना रही थी कि बरसात जितनी टल सके, टल जाये लेकिन वह समय से पहले ही आ धमकी। और मुझे जिसका डर था, वही हुआ। इस बार बरसात में पार्क की गीली मिट्टी सनी सड़क से उठकर उन्हीं लाल केंचुओं की फौज घर के भीतर तक चली आयी है। रसोई में जाओ तो मोरी के कोनों से ये केंचुए मुँह उचका-उचका कर झाँकते हैं, नहाने आओ तो बाल्टी के नीचे कोने पर वे बेखौफ चिपके रहते हैं। कभी-कभी पैरों के नीचे अचानक कुछ पिलपिला -सा महसूस होता है और मैं डर जाती हूँ कि कहीं मेरे पाँव के नीचे आकर कोई केंचुआ मर तो नहीं गया?

इस बार मुझे बाँकुड़ा का वह अपना (देखो, अब भी घर अपना लगता है) घर बहुत याद आया। ये यादों ही तुम्हारे साथ बाँटना चाहती थी। पता नहीं तुम्हें याद है या नहीं, पता नहीं बाबला को भी याद होगा या नहीं, हम

कितनी बेसब्री से बरसात के आने का इन्तज़ार करते थे। मौसम की पहली बरसात देखकर हम कैसे उछलते-कूदते माँ को बारिश के आने की खबर देते, जैसे पानी की बूँदें सिर्फ़ हमें ही दिखाई देती है, और किसी को नहीं । पत्तों पर टप-टप-टप बूँदों की आवाज़ और उसके साथ हवा में गमकती फैलती मिट्टी की महक हमें पागल कर देती थी। हम अखबार को काट-काट कर कागज की नवें बनाते और उन्हें तालाब में छोड़ते । माँ झांकती रहतीं और हम सारा दिन पोखर के पास और आँगन के बाहर, हाथ में नमक की पोटली लिए बरसाती केंचुओं को ढूँढ़ते रहते थे। वे इधर-उधर बिलबिलाते से हमसे छिपते फिरते गए और हम उन्हें ढूँढ़-ढूँढ़ कर मारते थे। नमक डालने पर उनका लाल रंग कैसे बदलता था, केंचुए हिलते थे और उनका शरीर सिकुड़कर रस्सी हो जाता था। बाबला और मुझमें होड़ लगती थी कि किसने कितने ज़्यादा केंचुओं को मारा। बाबला तो एक-एक केंचुए पर मुट्ठी भर-भर कर नमक डाल देता था।

माँ तुम्हें है, तुम कितना चिल्लाती थीं बाबला पर....इतना नमक डालने की क्या जरूरत है रे खोका। पर फिर हर बार जीतता भी तो बाबला ही था....उसके मारे हुए केंचुओं की संख्या ज़्यादा होती थी। बाबा, तुम डाकघर से लौटते तो पूछते....तुम दोनों हत्यारों ने आज कितनों की हत्या की? फिर मुझे अपने पास बिठाकर प्यार से समझाते.....बाबला की नकल क्यों करती है रे! तू तो माँ अन्नपूर्ण है, देवीस्वरूपा, तुझे क्या जीव-जन्तुओं की हत्या करना शोभा देता है? भगवान पाप देगा रे।

आज मुझे लगता है बाबा, तुम ठीक कहते थे। हत्या चाहे मानुष की हो या जीव-जन्तु की, हत्या तो हत्या है।

तो क्या बाबा, उस पाप की सजा यह है कि बाँकुड़ा के बाँसपुकुर से चलकर इतनी दूर बम्बई के अँधेरी इलाके के महाकाली केव्स रोड के फ्लैट में आने के बाद भी वे सब केंचुए मुझे घेर-घेकर कर डराते हैं, जिन्हें पुकुर के आस-पास नमक छिड़क -छिड़क कर मैंने मार डाला था।

यह मेरी शादी के बाद की पाँचवीं बरसात है। बरसात के ठीक पहले ही तुमने मेरी शादी की थी। जब बाँकुड़ा से बम्बई के लिए मैं रवाना हुई, तुम सबकी नम आँखों में कैसे दिये टिमटिमा रहे थे जैसे तुम्हारी बेटी न जाने कौन-से परीलोक जा रही है, जहाँ दिव्य अप्सराएँ उसके स्वागत में फूलों के थाल हाथों में लिए खड़ी होंगी। यह परीलोक, जो तुम्हारा देखा हुआ नहीं था पर तुम्हारी बेटी के सुन्दर रूप के चलते उसकी झोली में आ गिरा था, क्या अन्नपूर्णा और क्या उसके डाकिये बापू शिबू मंडल की औकात थी कि उन्हें रेलवे की स्थायी नौकरी वाला सुदर्शन वर मिलता? तुम दोनों तो अपने जमाई राजा को देख-देख कर ऐसे फूले नहीं समाते थे कि मुझे बी.ए की सालाना परीक्षा में भी बैठने नहीं दिया और दूसरों दर्जे की आरक्षित डोली में बिठाकर विदा कर दिया।

जब मैं अपनी बिछुआ-झाँझर संभाले इस परीलोक के द्वार दादर स्टेशन पर उतरी तो देखा जैसे तालाब में तैरना भूल गयी हूँ । इतने आदमी तो मैंने अपने पूरे गाँव में नहीं देखे थे। यहाँ स्टेशन के पुल की भीड़ के हुजूम के साथ सीढ़ियाँ उतरते हुए लगा जैसे पेड़ के सूखे पत्तों

की तरह हम सब हवा की एक एक दिशा में झर रहे हैं। देहाती -सी लाल साड़ी में तुम्हारे जीवन भर की जमा-पूँजी के गहने और कपड़ों का बक्सा लिए जब अँधेरी की ट्रेन में इनके साथ बैठी तो साथ बैठे लोग मुझे ऐसे घूर रहे थे जैसे मैं और बाबला कभी -कभार कलकत्ता के चिड़ियाघर में वनमानुष को घूरते थे। और जब महाकाली केव्स रोड के घर का जंग खाया ताला खोला तो जानते हो, सबसे पहले दहलीज पर मेरा स्वागत किया था–दहलीज़ की फाँकों में सिमटे-सरकते, गरदन उचकाते लाल-लाल केंचुओं ने। उस दिन मैं बहुत खुश थी। मुझे लगा, मेरा बाँकुड़ा मेरे आँचल से बँधा-बँधा मेरे साथ-साथ चला आया है। मैं मुस्कुरायी थी। पर मेरे पति तो उन्हें देखते ही खूंखार हो उठे। उन्होंने चप्पल उठायी और चटाख्-चटाख् सबको रौंद डाला। एक-एक वार में उन्होंने सबका काम तमाम कर डाला था। तब मेरे मन में पहली बार इन केंचुओं के लिए माया-ममता उभर थी। उन्हें उस तरह कुचले जाते हुए देखना मेरे लिए बहुत यातनादायक था।

दस दिन हमें एकान्त देकर आखिर इनकी माँ और बहन भी अपने घर लौट आयी थीं। अब हम रसोई में परदा डालकर सोने लगे थे। रसोई की मोरी को लाख बन्द करो, ये केंचुए आना बन्द नहीं करते थे। पति अक्सर अपनी रेलवे की ड्यूटी पर सफर में रहते और मैं रसोई में। और रसोई में बेशुमार केंचुए थे। मुझे लगता था, मैंने अपनी माँ की जगह ले ली है और अब मुझे सारा जीवन रसोई की इन दीवारों के बीच इन केंचुओं के साथ गुज़ारना है। एक दिन एक केंचुआ मेरी निगाह बचाकर रसोई से बाहर चला गया और सास ने उसे देख लिए । उनकी आँखें गुस्से से लाल हो गयीं। उन्होंने चाय के खौलते हुए पानी की केतली उठायी और रसोई में बिलबिलाते सब केंचुओं पर गालियाँ बरसाते हुए उबलता पानी डाल दिया। सच मानो बाबा, मेरे पूरे शरीर पर जैसे फफोले पड़ गये थए, जैसे खौलता हुआ पानी उन पर नहीं, मुझ पर जाला गया हो। वे सब फोरन मर गये, एक भी नहीं, बचा। लेकिन मैं जिन्दा रही। मुझे तब समझ में आया कि मुझे अब बाँकुड़ा के बिना ज़िन्दा रहना है। पर ऐसा क्यों हुआ बाबा, कि मुझे केंचुओं से डर लगने लगा। अब वे जब भी आते, मैं उन्हें वापस मोरी में धकेलती, पर मारती नहीं। उन दिनों मैंने यह सब तुम्हें खत में लिखा तो था, पर तुम्हें मेरे खत कभी मिले ही नहीं। हो सकता है, यह भी न मिले। या मिल भी जाये तो तुम कहो कि नहीं मिला। फोन पर मैंने पूछा भी था–चिट्ठी मिली? तुमने अविश्वास से पूछा-पोस्ट तो की थी या....। मैं हँस दी थी–अपने पास रखने के लिए थोड़े ही लिखी थी।

फोन पर इतनी बातें करना सम्भव कहाँ है। फोन की तारों पर मेरी आवाज़ जैसे ही तुम तक तैरती हुई पहुँचती है, तुम्हें लगता है, सब ठीक है। जैसे मेरा जिन्दा होना ही मेरे ठीक रहने की निशानी है। और फोन पर तुम्हारी आवाज़ सुनकर मैं परेशान हो जाती हूँ क्योंकि फोन पर मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि तुम जिस आवाज़ को मेरी आवाज़ समझ रहे हो, वह मेरी नहीं है। तुम फोन पर मेरा कुशल -क्षेम ही सुनना चाहते हो और मैं तुम्हें केंचुओं के बारे में कैसे बता सकती हूँ? तुम्हारी आवाज़ से मैं चाहकर भी तो लिपट नहीं सकती। मुझे तब सत्रह सौ किलोमीटर की

दूरी बुरी तरह खलने लगती है।

इतनी लम्बी दूरी को पार कर डेढ़ साल पहले जब मैं वहाँ बाँकुड़ा पहुँची थी, मुझे लगा था, मैं किसी अजनबी गाँव में आ गयी हूँ जो मेरा नहीं है। मुझे वापस जान ही है, यह सोचकर मैं अपने आने को भी भोग नहीं पायी। मैंने शिथिल होकर खबर दी थी कि मुझे तीसरा महीना चढ़ा है। मैं आगे कुछ कह पाती कि तुम सब में खुशी की लहर दौड़ गयी थी। माँ ने मुझे गले से लगा लिया था, बउदी ने माथा चुम लिया था। मैं नोयी थी, चीखी थी, मैंने मिन्नतें की गईं कि मुझे यह बच्चा नहीं चाहिए, कि उस घर में बच्चे की किलकारियाँ सिसकियों में बदल जाएँगी, पर तुम सब पर कोई असर नहीं हुआ। तुम चारों मुझे घेरकर खड़े हो गये.... भला पहला बच्चा भी कोई गिराता है, पहले बच्चे को गिराता है, पहले बच्चे को गिराने से फिर गर्भ ठहराता ही नहीं, माँ बनने में ही नारी की पूर्णता है, माँ बनने के बाद सब ठीक हो जाता है, औरत को जीने का अर्थ मिल जाता है। माँ, तुम अपनी तरह मुझे भी पूर्ण होते हुए देखना चाहती थी। मैंने तुम्हारी बात मान ली और तुम सब के सपनें को पेट में सँजोकर वापस लौट गयी।

वापस। उसी महाकाली के गुफाओं वाले फ्लैट में। उन्हीं केंचुओं के पास । बस, फर्क यह था कि अब वे बाहर फर्श से हटकर मेरे शरीर के भीतर रेंग रहे थे। नौ महीने मैं अपने पेट में एक दहशत को आकार लेते हुए महसूस करती रही। पाँचवों महीने मेरे पेटे में जब उस आकार ने हिलना -डुलना शुरू किया मैं भय से काँपने लगी थी। मुझे लगा, मेरे पेट में वही बरसाती केंचुए रेंग रहे हैं, सरक रहे हैं। आखिर वह घड़ी आयी, जब उन्हें मेरे शरीर से बाहर आना था और सच माँ, जब लंबी बेहोशी के बाद मैंने आँखें खोलकर अपने बहल में लेटी सलवटों वाली चमड़ी लिए अपनी जुड़वाँ बेटियों को देखा, मैं सकते में आ गयी। उनकी शक्ल वैसी ही गिजगिजी लाल केंचुओं जैसी झुर्रीदार थी। मैंने तुमसे कहा भी था...देखो तो माँ, ये दोनों कितनी बदशक्ल हैं, पतले-पतले ढीले ढीले हाथ- पैर और साँवली मरगिल्ली सी। तुमने कहा था, बड़ी बोकी है रे तू कैसी बातें करती है, ये तो साक्षात् लक्ष्मी सरस्वती एक साथ आयी हैं तेरे घर । तुम सब ने कलकत्ता जाकर अपनी बेटी और जमाई बाबू के लिए कितनी खरीदारी की थी, बउदी ने खास सोने का सेट भिजवाया था। सब दान - दहेज समेटकर तुम यहाँ आयीं और चालीस दिन मेरी, इन दोनों की और मेरे ससुराल वालों की सेवा–टहल करके लौट गयीं। इन लक्ष्मी-सरस्वती के साथ मुझे बाँधकर तुम तो बाँकुड़ा के बाँसपुकुर लौट गयीं, मुझे बार-बार यही सुनना पड़ा एक कपालकुण्डला को अस्पताल भेजा था, दो को और साथ ले आयी।

बाबा, कभी होता था-इन दोनों को बाँधकर तुम्हारे पास पार्सल से भिजवा दूँ कि मुझसे ये नहीं सँभालतीं, अपनी ये लक्ष्मी सरस्वती-सी नातिने तुम्हें ही मुबारक हों पर हर बार इनकी बिटर-बिटर सी ताकती हुई आँखें मुझे रोक लेती थीं।

माँ, मुझे बार-बार ऐसा क्यों लगता है कि मैं तुम्हारी तरह एक अच्छी माँ कभी नहीं बन पाउँगी जो जावन भर रसोई की चारदीवारी में बाबला और मेरे लिए पकवान बनाती रही और फालिज की मारी ठाकुर माँ की चादरें धोती-

समेटती रही। तुम्हारी नातिनों की आँखें मुझसे यब सब माँगती हैं जो मुझे लगता है, मैं कभी उन्हें दे नहीं पाउँगी।

इन पाँच-सात महीनों में कब दिन चढ़ता था, कब रात ढल जाती थी, मुझे तो पता ही नहीं चला। इस बार की बरसात ने आकर मेरी आँखों पर छाये सारे परदे गिरा दिये हैं । ये दोनों घिसटना सीख गयी हैं। सारा दिन कीचड़-मिट्टी में सनी केंचुओं से खेलती रहती हैं। जब ये घुटनों से घिसटती हैं, मुझे केंचुए रेंगते दिखाई देते हैं और जब बाहर सड़क पर मैदान के पास की गीली मिट्टी में केंचुओं को सरकते देखती हूँ तो उनमें इन दोनों की शक्ल दिखाई देती है। मुझे डर लगता है, कहीं मेरे पति घर में घुसते ही इन पर चप्पलों की चटाख-चटाख बौछार न कर दें या मेरी सास इन पर केतनी का खौलता हुआ पानी न डाल दें। मैं जानती हूँ, यह मेरा वहम है पर यह लाइलाज है और मैं अब इस वहम का बोझ नहीं उठा सकती। इन दोनों को अपने पास ले जा सको तो ले जाना। बाबला और बउदी शायद इन्हें अपना लें। बस, इतना चाहती हूँ कि बड़ी होने पर ये दोनों अगर आसमान को छूना चाहें तो यह जानते हुए भी कि वे आसमान को कभी नहीं छू पाएँगी, इन्हें रोकना मत।

इन दोनों के रूप में तुम्हारी बेटी तुम्हें सूद सहित वापस लौटा रही हूँ। इनमें तुम मुझे देख पाओगे शायद।

बाबहा, तुम कहते थे न -आत्माएँ कभी नहीं मरतीं। इस विराट व्योम में, शून्य में, वे तैरती रहती हैं – परम शान्त होकर । मैं उस शान्ति को छू लोना चाहती हूँ। मैं थक गयी हूँ बाबा। हर शरीर के थकने की अपनी सीमा होती है। मैं जल्दी थक गयी, इसमें दोष तो मेरा ही है। तुम दोनों मुझे माफ कर सको तो कर देना।

इति।

तुम्हारी आज्ञाकारिणी बेटी

अन्नपूर्णा मंडल

सुधा अरोड़ा

जन्म	:	4 अक्तूबर 1946, लाहौर (पाकिस्तान)
अध्ययन	:	कोलकत्ता विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए. । कोलकत्ता में दो डिग्री कॉलेजों में प्राध्यापन। महिला संगठनों में सक्रिय। सामाजिक कार्यों से जुड़ाव।
प्रकाशित कृतियाँ	:	बगैर तराशे हुए, युद्ध विराम, महानगर की मैथिली, काला शुक्रवार, काँसे का गिलास, मेरी तेरह कहानियाँ तथा रहोगी तुम वही (कहानी-संग्रह) आम आदमी, जिन्दा सवाल (आलेख संग्रह) दहलीज को लाँघते हुए पंखों की उड़ान (सम्पादन)।
पुरस्कार	:	उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का विशेष पुरुस्कार।